ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अप्रैल-२०१८

अप्रैल-२०१८ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

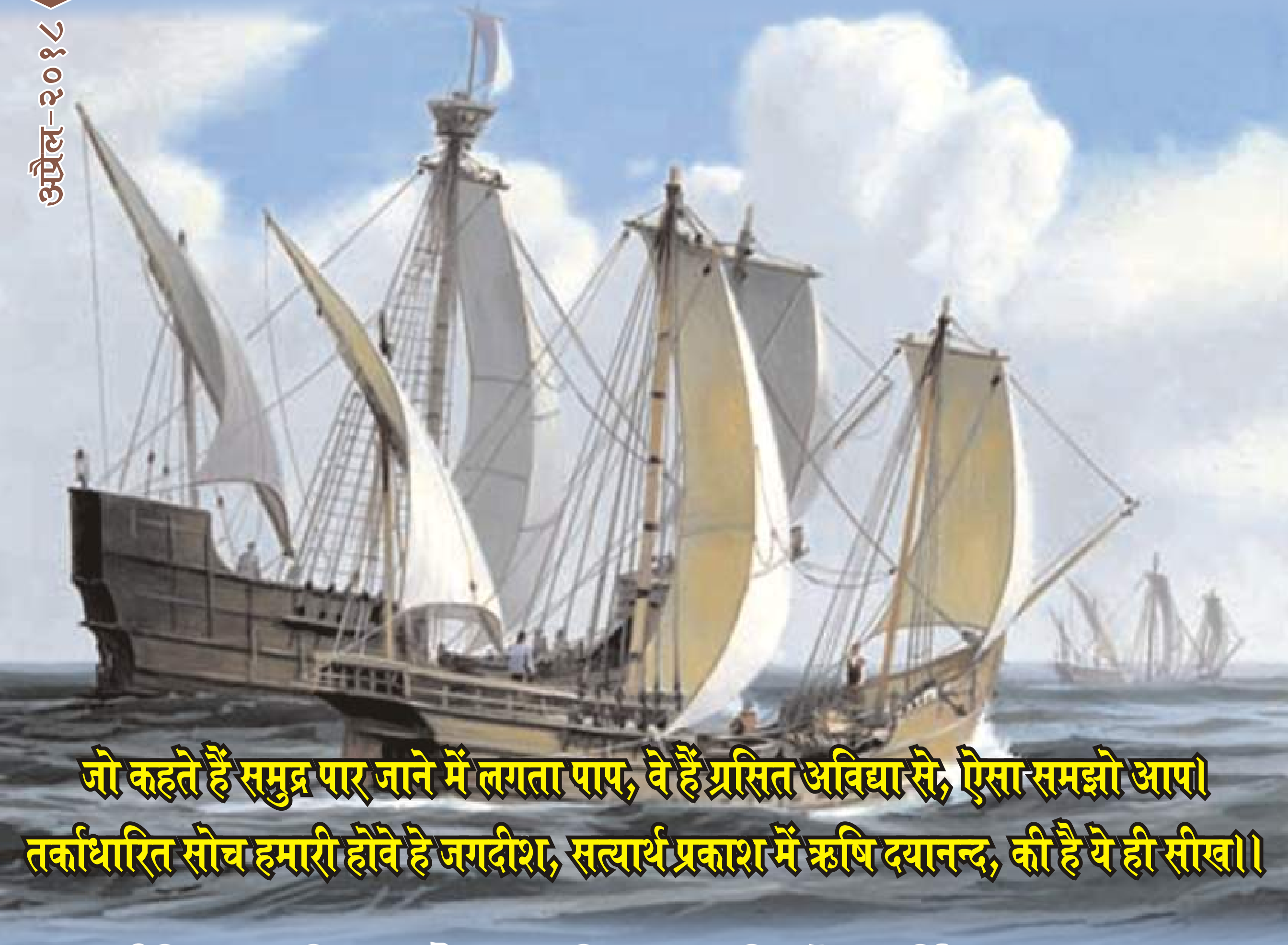

जो कहते हैं समुद्र पार जाने में लगता पाप, वे हैं ग्रसित अविद्या से, ऐसा समझो आप।
तर्काधारित सोच हमारी होवे हे जगदीश, सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि दयानन्द, की है ये ही सीख।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ७६

भारत
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
वैशाख कृष्ण सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

April - 2018

समाचार	०४	वेद सुधा
	०८	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/१८
२५	१५	ऋग्वेद में धनार्जन
	१७	भारतवर्ष की बदहाली के मूल कारण
	२२	'इदन्न न मम'
हलचल	२४	युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
२६	२७	स्वास्थ्य- अंडा शाकाहारी नहीं
	२६	कथा सरित- किसान और गेहूँ
	३०	कृतित्व प्रमाण है कर्त्ता का

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी - श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ अंक - ११

मुद्रण - द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

बुराई मत कर, दूसरों की बुराई करनेवाला अपनी बुराई करता है

यश्चकार न शशाक कर्तुं शश्रे पादमङ्गुरिम्।
चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः।। - अथर्व. ४/१८/६

यः- जो, अस्मभ्यम्-(उसने) हमारे लिये, चकार- (बुराई) करता है, भद्रं चकार- भला किया, न कर्तुं शशाक- वह न कर सका। तु आत्मने- किन्तु अपने लिये, पादम् अङ्गुरिम्- अपने पाँव (और) अङ्गुली का, सः- उसने, शश्रे- नाश करता है। तपनम्- सन्ताप, दुःख (लिया)।

व्याख्या- संसार में कुछ ऐसे प्राणी भी हैं, जिन्हें दूसरों को दुःख देने का व्यसन-सा होता है। उनका प्रयोजन सिद्ध हो या न हो, वे दूसरों को दुःख देंगे, इसमें उनको एक आनन्द आता है। वेद कहता है, जरा सावधान होकर देखो तो आपको अनुभव होगा कि बुराई करने वाला बेचारा बुराई कर नहीं सका। कैसे? दूसरों की बुराई (अनिष्ट) करने से पूर्व बेचारा अपना अनिष्ट कर बैठता है। कर्म करने से पूर्व उसके लिए पहले मन में भाव पैदा होता है। बुरा कर्म करने के लिए मन में बुरा भाव पैदा होगा, अर्थात् बुरा करने से पूर्व बुरा करने वाला अपने मन में बुराई के बीज बो बैठा, अपने मन को बुरा बना बैठा, दूसरे का अनिष्ट तो जब होगा, तब होगा, अपना तो हो गया। मानो अपने हाथों, अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार बैठा। तभी वेद ने कहा है-
शश्रे पादमङ्गुरिम्- अर्थात् अपने पैर और अङ्गुली का नाश करता है।

अथर्ववेद (४/१८/३) में इस भाव को अधिक स्पष्ट रूप से कहा है-
अमा कृत्वा पाप्मानं यस्तेनान्यं जिघांसति।
अश्मानस्तस्यां दग्धायां बहुलाः फट्करिक्रति।।
'कच्ची बुद्धि से पाप करके जो मनुष्य उसके द्वारा दूसरों की हिंसा करना चाहता है, उसकी बुद्धि जलने लगती है और उसमें पत्थर पड़कर फट्-फट् करने लगते हैं।'

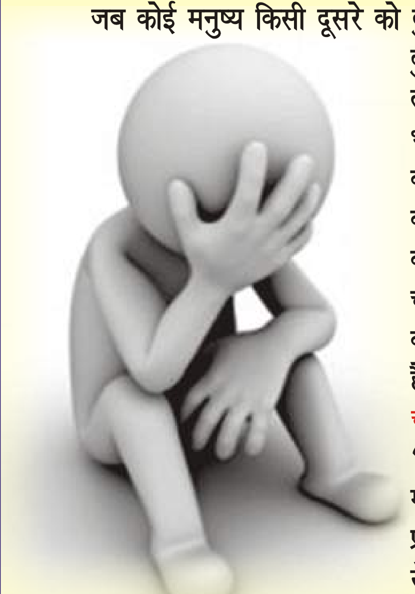

जब कोई मनुष्य किसी दूसरे को दुःख देने का इरादा करता है, जब तक उसे दुःख दे नहीं लेता, तब तक उसके मन में दुःखदायिनी बेचैनी रहती है और जब दुःख देने में सफल हो जाता है, तब उसे भय सताने लगता है। राजदण्ड का भय और सताये गये से बदले का भय उसे आ घेरते हैं। वेद इन भावों को 'बड़े-बड़े पत्थर' नाम देता है। वेद कहता है जैसे अग्नि में पड़कर पत्थर चट-चट करने लगते हैं और चटक चटककर पास ठहरे मनुष्य को हानि पहुँचाते हैं, इसी भाँति कच्ची बुद्धि से पाप होता है। उसके कारण वह जलने लगती है, पाप की पूर्वावस्था और पाप करने के बाद की अवस्था मानो पत्थर बनकर उस जलती हुई बुद्धि में पड़ते हैं और चटक-चटककर पास में रहने वाले पापकारी आत्मा को ही दुःख देने लगते हैं। शायद इसी का भाव लेकर लोग कहते हैं- पापी के मारने को पाप महाबली है। इसी कारण वेद में कहा है कि पापी दूसरे की हानि चाहता हुआ भी नहीं कर सकता। वरन्-
चकार भद्रमस्मभ्यम्।
'उसने हमारे लिए तो भला ही कर दिया।'
मनुष्य को दुःख मिलता है अपने किसी पाप के कारण। जब मुझे कोई दुःख मिले और मैं प्रसन्न मन से उसे सहन कर लूँ और मन में यह भाव धरूँ कि अच्छा हुआ कि कर्म की बही से एक कर्मरेखा तो कटी। उसे मैं समझूँ प्रभु का अनुग्रह। प्रभु मेरे पिता हैं, वे मेरी माता हैं। माता-पिता सन्तान का अमंगल कभी नहीं चाहते। वे तो सदा सन्तान का हित चाहते हैं। उस स्नेहमयी जगदम्बा की यह ताड़ना भी मेरे हित के लिए है। इस तरह विचारने से प्रतीत होता है कि मुझे दुःख देने वाले ने दुःख देकर मेरा भला किया है।
किसी कवि ने कहा है-

जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव येषां प्रसादात् सुविचक्षणोऽहम्।

'मेरे शत्रु सदा जीते-जागते रहें, जिनकी कृपा से मैं सतर्क व सावधान बना रहता हूँ।'

युधिष्ठिर वन में थे, वहाँ भी दुर्योधन उन्हें दुःख देने का यत्न करता रहता था, किन्तु युधिष्ठिर धैर्य रखते थे, वे व्याकुल नहीं होते थे, इससे संसार को युधिष्ठिर की 'धृति' का ज्ञान हुआ, उसके गुणों का प्रकाश हुआ, इस बात को लेकर व्यास मुनि ने युधिष्ठिर से कहा-

प्रकाशितत्वन्मतिशीलसाराः कृतोपकारा इव विद्विषस्ते।

तेरे शत्रु, तेरे बड़े उपकारी हैं, क्योंकि उन्होंने संसार में तेरी बुद्धि और चरित्र के बल को प्रकाशित किया है।

इस प्रकार धैर्य से विरोधी के विरोध और उसकी बुराई को सहन करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है। इससे हमारा भला ही होता है, अतः वेद ठीक कहता है- चकार भद्रमस्मभ्यम्। किन्तु आत्मने तपनम्। 'अपने लिए तो सन्ताप=जलन ही करता है।' यह दो तरह से होता है। जब दुष्ट देखता है कि मेरे दुर्व्यवहार के कारण अगला विचलित नहीं होता, तब वह और जलता है। इस तरह दूसरों का अनिष्ट करने से अपने लिए जलन ही होती है। दूसरा- उसे कर्म का फल भोगना पड़ता है। कहा है-

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। 'भला-बुरा कर्म अवश्य भोगना पड़ता है।'

बुरे कर्म का फल अच्छा हो ही नहीं सकता। एक मुसलमान कवि ने कहा है-

अज़ मकाफ़ाते अमल ग़ाफ़िल मशौ। गन्दुम अज गन्दुम बिरोयद जौ अज जौ।।

'कर्मफल से असावधान मत हो। देख, गेहूँ-से-गेहूँ पैदा होता है और जौ-से-जौ।'

अपने लिए बुरे बीज बोकर पापी अपना भविष्य बिगाड़ लेता है, इसलिए बुरा कर्म=(दूसरे का अनिष्ट) दूसरे के लिए तो अनिष्ट नहीं हो पाता, किन्तु उसके लिए-'आत्मने तपनम्' हो जाता है।

संकलनकर्त्ता एवं भाष्यकार-वे. शा. श्री स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
(साभार- स्वाध्याय-सन्दीप)

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

Being history student I remain always interested in the life events of Yug Purush. Excellent efforts by your organization to keep the history alive. Very clear premises, peaceful and full of positive vibes.

- Gulshan Kumar (Haryana)

नवलखा महल अपने आप में अद्वितीय है क्योंकि यहाँ पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे में बहुत ही शानदार तरीके से चित्रावली के माध्यम से दर्शाया गया है जो अपने आप में अनुकरणीय पहल है। साथ ही यहाँ स्वामी जी के बारे में अनछुए पहलुओं को भी दर्शाया गया है। यहाँ आकर मन आनन्दित हो गया।

- सुमित

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार)

Sadhu ki kutiya
साधु की कुटिया
अथवा
साधु की कुतिया

अभी हाल में सिनेविस्टा- स्टोरी टेलिंग एक प्रतियोगिता सम्पन्न हुयी थी, जिसमें लेखकों से कहानी मांगी गयीं थीं जिनका उपयोग वे फिल्म उद्योग में कर सकेंगे। इस प्रतियोगिता की ज्यूरी में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता आमिर खान के साथ साथ राजकुमार हीरानी, जुहू चतुर्वेदी तथा अंजुम राजवली सम्मिलित थे। इस प्रतियोगिता के १६ नियम बनाए गए थे जिसमें १६वें नियम में निर्देश दिया गया था .... All entries must be written in Roman English- Hindi written in English is also allowed- **Please do not submit scripts in Devanagari script.**

अर्थात् हिन्दी की स्क्रिप्ट रोमन लिपि में लिखी हो तभी स्वीकार की जावेगी , देवनागरी लिपि में लिखी स्क्रिप्ट स्वीकार नहीं की जावेंगी। किसी भाषा को उसकी स्वाभाविक लिपि से पृथक् करने का यह गंभीर षड्यंत्र है। हिन्दी के जो लेखक इस नियम को सर्वथा अनुचित मानते होंगे वे भी बजाय विरोध के येन-केन-प्रकारेण अपनी कृति रोमन में टंकित करके भेजेंगे क्योंकि पुरस्कार राशि ४६ लाख के लगभग है। एक प्रकार से यह भारतीय संविधान का अपमान भी है क्योंकि संविधान के अनुच्छेद ३४३ में देवनागरी को भारत की राजभाषा हिन्दी की आधिकारिक लिपि स्वीकार किया गया है। 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। - अनु. ३४३(१)'। देवनागरी मात्र हिन्दी की लिपि नहीं है, संविधान की ८वीं अनुसूची में शामिल संस्कृत, मराठी, डोगरी, बोडो, नेपाली, मैथिली आदि भाषाओं की भी आधिकारिक लिपि है।

वस्तुस्थिति यह है कि रोमन तो अंग्रेजी के उच्चारण के साथ ही न्याय नहीं कर सकी है। 'Cat' में 'क' के लिए जहां 'C' का प्रयोग है वहीं 'Kite' में 'क' के लिए ही 'K' का प्रयोग है। क्या विचित्र है एक 'क' के लिए दो अलग एल्फाबेट्स का प्रयोग है। ध्वनि एक, अल्फाबेट दो। और ऐसे तो सैंकड़ों उदाहरण हैं। रोमन लिपि की एक गंभीर कमी यह है कि इसमें लिखित किसी नाम का सही-सही उच्चारण क्या होगा यह कह पाना कठिन होता है। वस्तुतः हर उस लिपि के साथ ऐसी समस्या होती है, जो ध्वनिमूलक नहीं होती है। देवनागरी में ऐसा कदापि नहीं है। कोई भ्रम नहीं है। एक उच्चारण के लिए एक वर्ण है। यही ध्वन्यात्मक लिपि की विशेषता है। रोमन में लिखी हिन्दी को जब आप पढ़ेंगे तो सही उच्चारण के बारे में अनेक बार उलझन में पड़ जायेंगे। निश्चित मत नहीं हो पायेंगे। यही कारण है कि कुछ राजनेता जो हिन्दीविज्ञ नहीं हैं पर वोट माँगने हेतु हिन्दी में भाषण उनकी मजबूरी है अतः वे रोमन लिपि में लिखी हिन्दी से अपना काम चलाते हैं। पर उच्चारण-दुविधा के कारण वे कुछ का कुछ बोल जाते हैं और हँसी के पात्र बन जाते हैं। इस प्रतियोगिता के ज्यूरी सदस्य 'आमिर' को जब आप Amir लिखेंगे तो इसे आमिर पढ़ेंगे या अमीर? उच्चारण भ्रम रहेगा ही। हिन्दी के लिए रोमन लिपि की वकालत करने वाले चेतन भगत 'ऋतु' व 'रितु' को रोमन में लिखकर बताएँ। निश्चय ही वे एक Ritu ही लिख सकेंगे। 'बुद्धा' रोमन में कैसे लिखेंगे? Budha? क्या इसे बुध अथवा बुधा नहीं पढ़ सकते? रोमन लिपि में हिन्दी को लिखने वाले लोगों ने राम को रामा तथा कृष्ण को कृष्णा बना दिया। यह भाषा के साथ बलात्कार से कम नहीं। आश्चर्य है कि जिस रोमन लिपि को लेकर पाश्चात्य विद्वान् कलपते रहे हैं उसकी वकालत हिन्दी की लिपि के रूप में करना विडम्बना नहीं है तो और क्या है? जार्ज बर्नाड शा जैसे अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान् को रोमन लिपि की अवैज्ञानिकता से खिन्न होकर यह वसीयत करनी पड़ी थी कि अंग्रेजी भाषा में होने वाले

४२ उच्चारणों के लिए जो व्यक्ति ४२ अक्षरों की एक पूरी वर्णमाला तैयार कर दे, उसे वे अपनी सम्पत्ति का एक भाग देने को तैयार हैं। हिन्दी की वर्णमाला के सम्बन्ध में आशुलिपि के प्रवर्तक सर ईसाक पिटमेन ने कहा था, 'यदि संसार में कोई भी वर्णमाला सर्वाधिक पूर्ण है, तो वह हिन्दी की वर्णमाला ही है।' एक नहीं अनेक विदेशी विद्वानों ने रोमन लिपि की अपूर्णता का रोना रोया है। (परमानन्द पांचाल)

जबकि देवनागरी की प्रशंसा मुक्त कण्ठ से की गयी है। देखिये देवनागरी किसी भी लिपि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित लिपि है (सर विलियम जोन्स)। मानव मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमालाओं में नागरी सबसे अधिक पूर्ण वर्णमाला है(जान क्राइस्ट)। रोमन और देवनागरी के अन्तर को हम निम्न प्रकार भली भाँति समझ सकते हैं।

१- देवनागरी में एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण संकेत है, जबकि रोमन में एक ध्वनि के लिए एकाधिक प्रयोग मिलते हैं उदाहराणार्थ 'क' के लिए **k** 'Kite', **ch** 'School', **ck** 'Check' **que** 'Cheque' प्रयोग किए जाते हैं।

२- देवनागरी में एक वर्ण संकेत से अनिवार्यतः एक ही ध्वनि व्यक्त होती है, परन्तु रोमन के साथ ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए C का प्रयोग कहीं 'क' ध्वनि के लिए, कहीं 'च' ध्वनि के लिए और कहीं 'स' ध्वनि के लिए होता है।

३- देवनागरी में जो ध्वनि का नाम है वही वर्ण का नाम है परन्तु रोमन में ऐसा नहीं है 'H' को एच, W को डव्ल्यू कहा जाता है।

४- देवनागरी में मूक वर्ण नहीं होते जबकि रोमन में ये मूक वर्ण उच्चारण में समस्या उत्पन्न करते हैं यथा- Listen, Psychology जहाँ क्रमशः t तथा p मूक हैं।

५- देवनागरी की सबसे बड़ी विशेषता है कि जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। किसी को शुद्ध उच्चारण आता है तो वह बिना किसी भ्रम के शुद्ध लिख सकेगा। जबकि रोमन में ऐसा नहीं है। But को तो 'बट' परन्तु put को 'पट' न कहकर 'पुट' कहे जाने जैसी सैंकड़ों अव्यवस्थाएँ हैं। देवनागरी में एक वर्ण में दूसरे वर्ण का भ्रम नहीं होता । उच्चारण के सूक्ष्मतम भेद को भी प्रकट करने की क्षमता है, वर्णमाला ध्वनि वैज्ञानिक पद्धति के बिल्कुल अनुरूप है।

देवनागरी दिव्य लिपि है। वेद अपौरुषेय हैं यह हमारी शाश्वत मान्यता है, पर इससे सहमति न रखने वाले भी इन्हें प्राचीनतम तो मानते ही हैं। श्रुति परम्परा से निकल कर जब भी वेदों का लेखन किया गया तो देवनागरी में किया गया। देववाणी जिसमें लिखी गयी वही देवनागरी कहलायी ऐसा विदित होता है। हिन्दी की अपनी लिपि देवनागरी है। महर्षि दयानन्द पूना प्रवचन के नौवें प्रवचन में कहते हैं कि 'इक्ष्वाकु' यह आर्यावर्त्त का प्रथम राजा हुआ। .... इक्ष्वाकु के समय में लोग अक्षर स्याही आदि लिखने की रीति को प्रचार में लाये, ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि इक्ष्वाकु के समय में वेद को बिलकुल कंठस्थ करने की रीति कुछ-कुछ बन्द होने लगी। जिस लिपि में वेद लिखे जाते थे, उसका नाम देवनागरी ऐसा है, कारण देव अर्थात् विद्वान् इनका जो नगर, ऐसे विद्वान् नागर लोगों ने अक्षर द्वारा अर्थ संकेत उत्पन्न करके ग्रन्थ लिखने का प्रचार प्रथम प्रारम्भ किया।

सन्दर्भ- उपदेश मंजरी स्वामी दयानन्द पूना प्रवचन

इस प्रकार से आर्य भाषा अपौरुषेय एवं वैदिक काल की भाषा है जिसकी लिपि का विकास भी वैदिक काल में हो गया था।

अब प्रश्न यह उठता है आमिर खान हों या चेतन भगत कुछ भी तर्कपूर्ण तरीके से पक्ष में न होने पर भी हिन्दी को रोमन भाषा में लिखा जाय ऐसा प्रयत्न क्यों कर रहे हैं। वस्तुतः भारतीय संस्कृति, साहित्य, भाषा, प्राचीन गौरव उस पीढ़ी के निकट महत्त्व नहीं रखते जो सोचते भी अंग्रेजी में हैं और अगर आवश्यक हो तो उसे हिन्दी में अनूदित करते हैं। हिन्दी केवल और केवल व्यावसायिकता के कारण इनकी मजबूरी बन गयी है। हिन्दी का कितना भी विरोध किया जाय यह सत्य है कि हिन्दी विश्व में दूसरे नम्बर पर आती है। कुछ लोग तीसरे नम्बर पर मानते हैं। जो भी हो हिन्दी भारत में हिन्दी विरोधियों की मजबूरी बन गयी है। दिनों दिन अंग्रेजी चैनलों के हिन्दी चैनल खुलना, अंग्रेजी पत्रिकाओं व

> "रोमन लिपि में हिन्दी को लिखने वाले लोगों ने राम को रामा तथा कृष्ण को कृष्णा बना दिया। यह भाषा के साथ बलात्कार से कम नहीं।"

अखबारों के बढ़ते हुए हिन्दी संस्करण, हिन्दी अखबारों की सर्वोच्च विक्रय संख्या इस बात के प्रमाण हैं। पर इन उपक्रमों से लाभ उठाने वाले तथाकथित पढ़े-लिखे लोग अंग्रेजी के शैदायी हैं, उन्हें रोमन लिपि सुविधाजनक लगती है। अतः सदैव इस तरह के प्रयास करते हैं कि हिन्दी रोमन में लिखी जाय या फिर हिन्दी और देवनागरी में विच्छेद कराके उसका आवश्यक परिणाम अर्थात् हिन्दी का विनष्ट होना इनकी प्रच्छन्न चाहत है। यह इस प्रकार का षड्चंत्र है जिस पर ज्यादा ध्यान कम से कम अभी नहीं दिया जा रहा जबकि अत्यन्त गंभीरता से इस षड्चंत्र को रोकने का प्राणप्रण से प्रयास किया जाना चाहिए। अंग्रेजी आप रोमन में लिखना चाहते हैं- लिखें परन्तु हिन्दी की श्री शोभा देवनागरी ही में है। यह हिन्दी ही है जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतीयों में एक छोर से दूसरे छोर तक देशभक्ति के भावों को संप्रेषित किया। स्वतंत्रता आन्दोलन के सभी नायक इस तथ्य से परिचित थे कि १८५७ से १९४७ तक हिन्दी स्वतंत्रता आन्दोलन की भाषा थी। वे भारतीय राष्ट्र-राज्य की इस अनिवार्यता से भी परिचित थे कि उसके लिए 'एक निशान, एक विधान और एक जुबान' होनी चाहिए। बहुभाषा-भाषी भारत में एक जुबान की अनिवार्यता को पूरा करने के लिए ही स्वामी दयानन्द सरस्वती से लेकर सुभाषचन्द्र बोस तक ने भारत की राजभाषा हिन्दी रखने के लिए हरसंभव प्रयास किए थे। हिन्दी का ऊपरी तौर पर प्रयोग परन्तु इसे रोमन में लिपिबद्ध करने योजना गर्हित है। हिन्दी देवनागरी में ही जीवित रहेगी। देवनागरी का जिस तरह से कम्प्यूटर आदि में इस्तेमाल हो रहा है उससे यह भी संभावना बन रही है कि अपनी निश्चितता तथा वैज्ञानिकता आदि खूबियों के कारण देवनागरी विश्वलिपि के पद पर आसीन हो सकती है। हाँ अगर आप रोमन में कुटिया (Kutiya) लिखें (क्योकि इसे रोमन में ऐसे ही लिखा जाएगा, वहाँ 'टि' 'ति' को लिखने की कोई अलग व्यवस्था नहीं है) और कोई इसे 'कुतिया' उच्चारित करे और आपको कोई आपत्ति न हो तो फिर हमें कुछ नहीं कहना।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०४/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	प १		र	१	ख १	■	२	२	म् २
३ नि		३	र ३	■	■	४	र्म	४	थ ४
५	या ५	■	६	श्व	६	■	७	प ७	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. ईश्वर के न्याय और दया दोनों का ही प्रयोजन जीव को किनसे पृथक कर देना है?

२. परमात्मा के किस नाम का अर्थ विचार करे?

३. परमेश्वर कैसा है?

४. मन सब इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक के किसमें चलाया करे?

५. जो मन में सबको सुख होने और दुःख छूटने की इच्छा और क्रिया है वह परमेश्वर की क्या है?

६. धर्म से पुरुषार्थी पुरुष का सहाय कौन करता है?

७. नित्यप्रति क्या किया करें?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०२/१८ का सही उत्तर

१. निर्भ्रम	२. अनन्त सामर्थ्य		३. शरीर
४. सर्वान्तर्यामी	५. हाँ	६. न्यायकारी	७. दण्ड

"विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०१८

विकासवाद का वैदिक सिद्धान्त

सृष्टि व मनुष्य की उत्पत्ति वैज्ञानिक जगत् के लिए कौतूहल का विषय रही है। चार्ल्स डार्विन के विकासवाद की परिकल्पना के पश्चात् इसके समर्थन तथा विरोध दोनों ही पक्षों में बहस चलती आ रही है। विकासवादी अवधारणा अमीबा से लेकर मनुष्य तक की शृंखला को क्रमिक विकास की देन मानती है जिसमें विभिन्न प्रजातियों में परिस्थितियों के अनुकूल कुछ परिवर्तन आते रहकर उन्हीं से नयी-नयी प्रजातियाँ उत्पन्न होती रहीं। इस प्रकार इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य एवं अन्य पशु पक्षियों, कीट पतंगों, सभी के पूर्वज एक ही थे तथा आधुनिक बन्दर मनुष्य का सर्वाधिक निकट सम्बन्धी है। विभिन्न प्रजातियों में नाना अंगों का विकास स्वयमेव आवश्यकता के अनुरूप होता रहा अर्थात् एक प्राणी दूसरे प्राणी में किसी विकृति के कारण बदलता रहा। इस विकासवाद के विरुद्ध अनेक विदेशी वैज्ञानिकों ने भी समय-समय पर अनेक सिद्धान्त दिए हैं। शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास एवं भाषा के विकास, इन तीनों ही विषयों पर विकासवाद के विरोधी विदेशी वैज्ञानिकों ने भी अनेक गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं, परन्तु विकासवादी इन प्रश्नों का समुचित उत्तर नहीं दे पाते । इधर भारत में महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं उनके परवर्ती व अनुयायी अनेक विद्वानों ने विकासवाद की अवधारणा को मिथ्या सिद्ध किया है, पुनरपि डार्विन का विकासवाद आज भी कुछ पूर्वाग्रही वैज्ञानिकों के लिए आदर्श सिद्धान्त बना हुआ है।

अभी केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री श्रीमान् डॉ. सत्यपाल सिंह जी के वक्तव्य- 'कि हम सभी मानव बन्दरों की नहीं, बल्कि मानव की ही सन्तान हैं, पर ये महानुभाव कोलाहल करते हुए उन पर चतुर्दिक आक्रमण करने लगे। देश के वैज्ञानिक व वैज्ञानिक संस्थान भी सब एकजुट हो जाते हैं। मैंने भी इन सभी से सोशल मीडिया के माध्यम से अनेक प्रश्न पूछे थे परन्तु किसी भी प्रमाणित संस्था वा विद्वान् ने मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया बल्कि कुछ महानुभावों ने अनर्गल प्रलाप ही किया। इन महानुभावों को किसी भी देशी अथवा विदेशी वैज्ञानिक अथवा विचारक का यह कथन कदापि स्वीकार नहीं कि हम मनुष्य की ही सन्तान हैं?

मेरे प्रश्नों के उत्तर में केवल मेरा सिद्धान्त जानने की इच्छा व्यक्त करने वाले महानुभावों के लिए मैं वैदिक विकासवाद पर अपने संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करता हूँ।

वस्तुतः विकासवाद पर विचार करें, तो यह शब्द अति उत्तम व सार्थक है, लेकिन डार्विन एवं उनके समर्थकों ने इस शब्द का समुचित अर्थ नहीं जाना और अपने अवैज्ञानिक मत को विकासवाद विशेषण से विभूषित करने का प्रयास किया। अगर हम सम्पूर्ण सृष्टि पर गंभीरता से विचार करें तो स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण सृष्टि एवं उसका प्रत्येक उत्पन्न पदार्थ विकास की सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते ही वर्तमान स्वरूप में आज दिखाई दे रहा है। बिना क्रमिक विकास के प्राणी जगत् की बात ही क्या करें, कोई लोक-लोकान्तर वा एक कण, फोटोन आदि भी कभी नहीं बन सकता। वैदिक विज्ञान विकासवाद की विशद् व्याख्या करता है परन्तु हमारा विकासवाद डार्विन का विकासवाद कदापि नहीं है। डार्विन का विकासवाद वस्तुतः विकासवाद नहीं है, बल्कि अनियंत्रित व बुद्धिविहीन

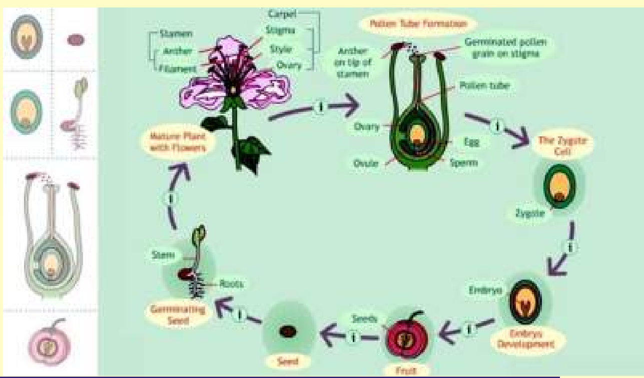

यदृच्छयावाद (मनमानापन) है, जिसे भ्रमवश वैज्ञानिक विकासवाद नाम दिया जा रहा है।

वास्तव में विकास का अर्थ है, बीज से अंकुर, अंकुर से पौधा व उससे पुष्प, फल व पुनः बीज का उत्पन्न होना। आज विज्ञान जिन्हें मूल कण मान रहा है, वे क्वार्क तथा फोटोन्स भी वास्तव में मूल पदार्थ नहीं हैं। वे भी सूक्ष्म रश्मियों के संघनित रूप हैं अर्थात् उन रश्मियों के नाना समुदायों के विकसित रूप हैं। जो string theorist इन कणों को सूक्ष्म strings से निर्मित मानते हैं, वे string भी मूल तत्व नहीं हैं, बल्कि वे वैदिक रश्मियों के संघनित व विकसित रूप हैं। string व कणों वा फोटोन्स के विकास में वर्तमान विज्ञान अनभिज्ञ है। जीवविज्ञानी जिस अमीबा को सबसे छोटी इकाई मानते हैं अथवा उसके अन्दर विद्यमान गुणसूत्र, जीन्स, डीएनए आदि को सूक्ष्मतम पदार्थ मानते हैं, वे नहीं जानते कि जहाँ उनका जीव विज्ञान समाप्त हो जाता है, वहाँ भौतिक विज्ञान प्रारम्भ होता है और जहाँ वर्तमान भौतिक विज्ञान समाप्त होता है वहाँ वैदिक भौतिक विज्ञान प्रारम्भ होता है और जहाँ वैदिक भौतिक विज्ञान की सीमा समाप्त होती है वहाँ वैदिक आध्यात्मिक विज्ञान प्रारम्भ होता है। आज विडम्बना यह है कि वैदिक भौतिक विज्ञान एवं वैदिक आध्यात्मिक विज्ञान की नितान्त उपेक्षा करके वा उसका उपहास वा विरोध करके भौतिक विज्ञान एवं जीव विज्ञान आदि की समस्याओं का हल खोजने का प्रयास किया जा रहा है। यह भी एक दुःखद सत्य है कि संसार को वैदिक भौतिक विज्ञान से अवगत कराने वाले भी कहाँ हैं? इस कारण वर्तमान विज्ञान अनेक समस्याओं से ग्रस्त है तथा एक समस्या का समाधान करने का प्रयास करता है तो अनेक नई समस्याओं को उत्पन्न भी कर लेता है। एक टेक्नोलॉजी का आविष्कार करता है तो नाना दुष्प्रभावों को भी उत्पन्न कर लेता है, दवाओं के विकास के साथ रोगों का भी निरन्तर विकास हो रहा है, सुख साधनों के विकास के साथ-साथ अपराधों एवं पर्यावरण प्रदूषण को भी समृद्ध करता जा रहा है। इन सब समस्याओं का मूल कारण है, वर्तमान विज्ञान का अपूर्ण ज्ञान, जिसका कारण वैदिक ज्ञान की उपेक्षा ही है। अस्तु।

हम चर्चा कर रहे थे कि सृष्टि का प्रत्येक कथित मूलकण व फोटोन सूक्ष्म वैदिक रश्मियों के अति बुद्धिमतापूर्ण संयोग से बने हैं। वे रश्मियाँ मनस्तत्व एवं मनस्तत्व, काल व प्रकृति के संयोग से उत्पन्न होता है। सबके पीछे सर्वनियंत्रक, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ चेतन सत्ता की प्रेरणा है। सृष्टि के सर्वाधिक सूक्ष्म तत्व प्रकृति से लेकर वर्तमान मूलकणों तक की विकास यात्रा बड़ी लम्बी व व्यवस्थित वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका वर्तमान भौतिक वैज्ञानिकों को विशेष भान नहीं है। मूलकणों एवं फोटोन की उत्पत्ति से लेकर तारे, ग्रह व उपग्रहों तक के निर्माण तक की विकास यात्रा की चर्चा करना उचित नहीं। वैसे वर्तमान Cosmology, particle Physics, Astrophysics, Quantum field theory, string theory जैसी विभिन्न शाखाएँ इन विषयों की अपनी सीमा के अन्दर व्याख्या करती हैं। मेरा विषय भी इन्हीं पदार्थों पर गंभीर प्रकाश डालना है। जीव विज्ञान मेरा विषय नहीं है, पुनरपि वर्तमान अन्ध कोलाहल के बीच कुछ युवकों के आग्रह पर मैं अपनी बात भौतिक विज्ञान की गहराइयों को छोड़कर वनस्पति व प्राणिजगत् की उत्पत्ति पर ही केन्द्रित करता हूँ।

जब पृथिवी जैसा कोई ग्रह अपने तारे से पृथक् होता है, किंवा तारा उन ग्रहों के पृथक् होकर दूर जाता है, उस समय ग्रह का स्वरूप आग्नेय होता है।

धीरे-धीरे वह आग्नेय रूप ठंडा होकर द्रवीय रूप में परिणित होने लगता है और उस समय उत्पन्न जल वाष्प धीरे-धीरे

ठंडी होकर वृष्टि होने से पृथिवी पर जल भरने लगता है। जो भाग जल से बाहर रहता है, वहाँ भी जीवन की उत्पत्ति हेतु आवश्यक तत्त्व ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन, नाइट्रोजन, डी.एन.ए., आर.एन.ए., वसा, अमीनो अम्ल, प्रोटीन, जल आदि विभिन्न रासायनिक अभिक्रियाओं के निरन्तर चलते रहने के कारण उत्पन्न होने लगते हैं। इनकी उत्पत्ति में सहस्रों वर्ष लगते हैं। सद्यः उत्पन्न सागरों में भी ये पदार्थ उत्पन्न हो जाते हैं। इनके पुनः अग्रिम विकसित व संयुक्तरूप से एककोशीय वनस्पति की उत्पत्ति होती है। विभिन्न एटम्स व छोटे मॉलीक्यूल्स के विशिष्ट व बुद्धिजन्य संयोग से वनस्पति कोशिका की उत्पत्ति अति रहस्यमयी व व्यवस्थित प्रक्रिया है। यह बात सदैव ध्यातव्य है कि सूक्ष्म रश्मियों से लेकर वनस्पति कोशिका के निर्माण के सहस्रों चरणों का

संचालन किसी यदृच्छया (मनमानापन) प्रक्रिया से संभव नहीं हो सकता और न ही यह सब निष्प्रयोजन और अनियंत्रित प्रक्रिया है, बल्कि यह ईश्वर तत्व द्वारा बुद्धिपूर्वक प्रेरित, नियंत्रित व एक विशिष्ट प्रयोजनयुक्त प्रक्रिया है। एक-एक कोशिका की संरचना को ध्यान से देखें तो पायेंगे कि इसमें अरबों सूक्ष्म कणों का एक विशिष्ट वैज्ञानिक संयोग है और उनमें से प्रत्येक कण सैंकड़ों सूक्ष्म वैदिक रश्मियों का विशिष्ट संयुक्त वा विकसित रूप है। इस कारण सर्वत्र चेतनशक्ति की अनिवार्य भूमिका है। इसके बिना यह प्रक्रिया एक कदम आगे नहीं बढ़ सकती है। यह भी ध्यातव्य है कि जल, वायु, भूमि एवं इनमें वा इनके द्वारा नाना जीवनीय तत्व बनने के उपरान्त सर्वप्रथम वनस्पति की ही उत्पत्ति होती है।

वनस्पति कोशिका के उत्पन्न होने, उसके जीवित रहने एवं उसके विकसित होकर पौधे के उत्पन्न होने के लिए आवश्यक तत्वों की उत्पत्ति पहले होती है, उसके पश्चात् ही वनस्पति कोशिका का जन्म रासायनिक प्रक्रिया से होता है। प्राणी कोशिका वनस्पतियों के निर्माण के पश्चात् ही उत्पन्न होती है। इसका कारण है कि सभी जीव जन्तु वनस्पतियों पर ही प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से निर्भर हैं। मांसाहारी प्राणी शाकाहारी प्राणियों पर निर्भर रहते हैं। इस कारण

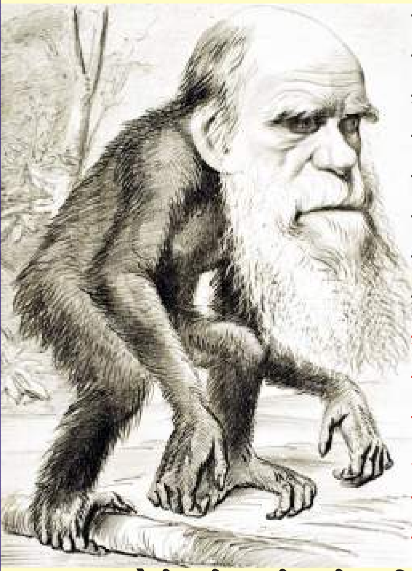

वनस्पतियों की उत्पत्ति के पश्चात् जीव जन्तुओं की उत्पत्ति एककोशीय जीव से ही प्रारम्भ होती है। वनस्पतियों में भी सरल से जटिल संरचना वाली वनस्पतियों की क्रमिक उत्पत्ति होती है। क्रमिक उत्पत्ति का अर्थ यह नहीं कि शैवाल विकसित होकर वट वृक्ष बन जाये अथवा पीपल, आम, बबूल और बादाम का रूप ले ले। इसी प्रकार एककोशीय जीव अमीबा की उत्पत्ति भूमि वा जल में होती है, लेकिन कोई जीव भले ही वह एककोशीय हो अथवा बहुकोशीय केवल कुछ पदार्थों का रासायनिक संयोग मात्र ही नहीं होता, अपितु उसके अन्दर सूक्ष्म चेतन तत्व जीवात्मा का भी संयोग होता है। सम्पूर्ण संयोग ही जीव का रूप होता है। वर्तमान विज्ञान भी रासायनिक संयोगों से कोशिका की उत्पत्ति मानता है-

A very important step in the formation of a cell must have been the development of lipid membrane. In order that biological system can functions efficiently, it is essential that the enzymes connected with successive stages of synthesis of biochemical pathway should be in a close proximity to one another. The necessary conditions for this are obtained in cells by means of lipid manbranes which can maintain local high concentration of reactants. The presence of hydrocarbons early in the earth's history has already been mentioned----

Life requires for its maintenance a continuos supply of energy this could have been provided by ultraviolet visible light from the sun or possibly partly from break down of unstable free radiations produced in the earth's atmosphere by ultraviolet light. (Cell Biology, page – 474 by E.J. Ambrose & Dorothy M. Easty, London – 1973)

भाव यह है कि इस पृथिवी पर रासायनिक, जैविक क्रियाओं से विभिन्न प्रकार के एंजाइम्स का निर्माण होकर जीवन हेतु आवश्यक पदार्थों का निर्माण हो गया। इसके साथ ही अनेकत्र रासायनिक पदार्थों द्वारा ही कोशिका भित्तियों तथा जीव द्रव्यादि का निर्माण इस भूमि पर हुआ उन कोशिकाओं को सतत पोषण देने का कार्य पृथिवी पर उपस्थित आवश्यक रासायनिक पदार्थों तथा सूर्य के प्रकाश ने किया।

कुछ वैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कि पृथिवी पर जीवन किसी अन्यग्रह से आया, उनसे हम जानना चाहते हैं कि जिस प्रकार किसी अन्य ग्रह पर जीवन की उत्पत्ति हो सकती है, उसी प्रकार इस पृथिवी पर क्यों नहीं हो सकती? वस्तुतः ऐसा विचार सर्वथा अपरिपक्व सोच का परिणाम है। वर्तमान कुछ वैज्ञानिक भी इस धारणा से सहमत नहीं हैं। वे कहते हैं:-

The view the life did in fact originate on the earth itself after it had cooled over a period of many thousands of years is almost universally accepted today (Cel Biology, Page 474)

जो वैज्ञानिक अमीबा से विकसित होकर अर्थात् एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति के उत्पन्न होने की बात कहते हैं, वे यह

नहीं विचारते कि न तो वनस्पति में और न प्राणियों में ऐसा परिवर्तन संभव है और न इसकी कोई आवश्यकता है। हम यहाँ वैज्ञानिकों के कल्पित व मिथ्या विकासवाद पर कोई प्रश्न नहीं करेंगे क्योंकि हम इस पर पहले अनेक प्रश्न कर चुके हैं। जो डार्विन के विकासवाद की विस्तार से समीक्षा चाहते हैं, उन्हें आर्य विद्वान् पंडित रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित 'वैदिक सम्पत्ति' नामक ग्रन्थ पढ़ना चाहिए। भला जब अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से हो सकती है, तब विभिन्न प्राणियों के शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती? जब ५०० से अधिक गुणसूत्रों वाला अमीबा रासायनिक अभिक्रिया से उत्पन्न हो सकता है, तब बन्दर, चिम्पैंजी, ओरांगउटान जिनमें ४८-४८ गुणसूत्र होते हैं, ४६ गुणसूत्र वाले मनुष्य में स्त्री व पुरुष के २३-२३ गुणसूत्र वाले शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति अमीबा की भाँति क्यों नहीं हो सकती? मनुष्य के ही बराबर गुणसूत्र वाले Sable Antelope जैसे हिरन जैसे पशु तथा Reaves's Muntjac नामक हिरन जैसे जानवर के शुक्राणु व अण्डाणु, ५६ गुणसूत्र वाले हाथी के शुक्राणु व अण्डाणु क्यों उत्पन्न नहीं हो सकते? चींटी, जिसमें केवल २ गुणसूत्र ही होते हैं, वह क्यों नहीं उत्पन्न हो सकती?

यहाँ वैदिक मत यह है कि जीव के भरण-पोषण हेतु जितने कम पदार्थों की आवश्यकता होती है वह जीव उतना पहले ही उत्पन्न होता है। सभी प्राणियों से पूर्व वनस्पतियों की उत्पत्ति होती है और मांसाहारी प्राणियों से पूर्व शाकाहारी प्राणियों की तथा शाकाहारियों में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसे सबसे विकसित वा उन्नत माना जा सकता है एवं वह विभिन्न प्राणियों व वनस्पतियों पर निर्भर रहता है, इसी कारण उसकी उत्पत्ति सबसे बाद में होती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि भ्रूणों का विकास बिना मादा के कैसे हो सकता है? शुक्राणु व अण्डाणु तो मान लें रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप भूमि वा जल में उत्पन्न हो गया परन्तु शुक्राणु व अण्डाणु का निषेचन व भ्रूण का विकास कहाँ व कैसे हुआ? इस विषय में मनुष्योत्पत्ति की चर्चा करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ में युवावस्था में भूमि से उत्पत्ति बताई है। उन्होंने तर्क दिया है कि यदि शिशु अवस्था में उत्पत्ति होती तो उनकी रक्षा व पालन कौन करता तथा यदि वृद्ध उत्पन्न होते तो वंश परम्परा कैसे चलती? इस कारण मनुष्य की युवावस्था में ही भूमि से उत्पत्ति होती है। यद्यपि इस विषय में उन्होंने कोई प्रमाण नहीं दिया परन्तु हमें ऋग्वेद के प्रमाण इस विषय में मिले, जहाँ लिखा है-

उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम्।
ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात्॥

- ऋग्वेद १०.१८.१०

इस पर मेरा आधिभौतिक भाष्य -

हे जीव! (सुशेवाम्) {सुशेवः सुसुखतमः- निरुक्त ३.३} उत्तम सुख देने में सर्वश्रेष्ठ (एताम्) इस (मातरम्) माता के समान (भूमिम्) प्रारम्भ में जिसके गर्भ में सभी प्राणी उत्पन्न होते वा जिस पर सभी प्राणी निवास करते हैं, वह पृथिवी (उरु-व्ययचसम्) अति विस्तार वाली होकर सभी भ्रूणों को (उपसर्ग) निकटता से प्राप्त होती है, इसके साथ ही उस गर्भ का आन्तरिक आवरण निरन्तर हल्का स्पन्दन करता रहता है (ऊर्णम्रदा) {ऊर्णम्रदा इत्यूर्णमृद्वीत्येवैतदाह- काश. ४.२.१.१०, साध्वी देवेभ्य इत्येवैतदाह यदाहोर्णम्रदसं त्वेति-श. १.३.३.११} वह भूमि उन भ्रूणों को ऐसा आच्छादन प्रदान करती है, जो ऊन के समान कोमल,

चिकना व आरामदायक हो। वह उस दिव्य भ्रूण को सब ओर से गर्भ के समान सुखद स्पर्शयुक्त घर प्रदान करती है। (युवतिः) उस गर्भरूप पृथिवी में नाना जीवनीय रसों के मिश्रण अमिश्रण की क्रियाएँ निरन्तर चलती रहती हैं (दक्षिणावतः) वह पृथिवी उन भ्रूणों को तब तक पोषण प्रदान करती रहती है, जब तक वे अपना पालन व रक्षण करने में पूर्ण दक्ष अर्थात् सक्षम न हो जायें (एषा) यह भूमि (त्वा) तुम जीव को (निर्ऋतेः-उपस्थात्){निर्ऋतिर्निरमणात् ऋच्छतेः कृच्छ्रापत्तिरितरा निरु.२.८} पूर्ण रूप से निरन्तर से सानन्द रमण करती है, ऐसे सुरक्षित व उत्तम स्थानों में उन भ्रूणों वा जीवों का पालन करती है। इसके साथ ही जहाँ क्लेश पहुँच सकता है, ऐसे असुरक्षित स्थानों से उस भूमि के गर्भरूप आवरण उस जीव व भ्रूण की रक्षा करते हैं।

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवी मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भम ऊर्णुहि॥

- ऋग्वेद १०.१८.११

मेरा आधिभौतिक भाष्य-

(पृथिवी) वह गर्भरूप पूर्वोक्त पृथिवी (उच्छ्वञ्चस्व) उत्कृष्टरूपेण ऊर्ध्व दिशा में स्पन्दित होती हुई किंवा उफनती हुई होती है। (मा बाधथाः) उस भूमि का आवरण ऐसा होता है, जो उसके अन्दर पल रहे भ्रूण वा जीव को प्राप्त हो रहे जीवनीय रसों को नहीं रोकता है अर्थात् वे रस रिस-रिस कर उस जीव को प्राप्त होते रहते हैं (अस्मै) वह इस जीवन के लिए (सूपायना-भव) वह भूमि उसे पोषक व संवर्धक जीवनीय तत्वों का उपहार भेंट करती है (सूपवञ्चना) {उपवञ्चनम्= दुबकना-आप्टे} वह भूमि आवरण उन भ्रूणों वा जीवों को अच्छी प्रकार छिपाकर आश्रय प्रदान करता है। (माता यथा) जिस प्रकार माता अपनी सन्तान को गोद वा गर्भ में ढक कर सुरक्षा प्रदान करती है, उसी प्रकार (नि-सिचा भूमेः) {नि+सिच्-ऊपर डाल देना, गर्भयुक्त करना- आप्टे} भूमि के वे भाग उन जीवों को अपने गर्भ में लेकर उनके ऊपर नाना आवरणों के द्वारा (एनं) उन जीवों को (अभि ऊर्णुहि) सब ओर से आच्छादित कर लेते हैं।

उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र॥

- ऋग्वेद १०.१८.१२

मेरा आधिभौतिक भाष्य-

(उच्छ्वञ्चमाना) पूर्वोक्त उफनी एवं मृदु स्पन्दन करती हुई सी कोमल (पृथिवी) भूमि (सु तिष्ठतु) उन भ्रूणों वा जीवों की आच्छादिका होकर सुदृढ़ता से सुरक्षापूर्वक स्थित होकर उन जीवों को भी स्थैर्य प्रदान करती है। (सहस्रम् मितः) उस भूमि के पृथक्-पृथक् स्थानों में अनेक संख्या में (उप हि श्रयन्ताम्) जीव निकटता से आश्रय पाते हैं किंवा उन गर्भरूप स्थानों में बड़ी संख्या में {मितः= मिनोतिगतिकर्मा- निघं. २.१४} विभिन्न सूक्ष्म अणुओं का प्रवाह बना रहता है (ते गृहासः) भूमि के वे स्थान उन जीवों के लिए घर के समान होते हैं {गृहाम्= गृहाः कस्माद् गृह्णातीति सताम्- निरु. ३.१३} और घर के समान वे भूकोष्ठ उन जीवों को ऐसे ही पकड़े वा धारण किए रहते हैं जैसे माता अपनी सन्तान को गर्भ में धारण किए रहती है (धृतश्चुतो भवन्तु) वे भूकोष्ठ ऐसे होते हैं कि उनमें घी के समान चिकने रस सदैव रिसते रहते हैं (अस्मै) वे उन जीवों के लिए (विश्वाहा) {विश्वाहा= सर्वाणि दिनानि- म.द.य.भा. ७.१०} सर्वदा अर्थात् पूर्ण युवावस्था तक (शरणाः सनतु अत्र) इस अवस्था में वे जीव उन कोष्ठों में आश्रय पाते हैं।

इन मंत्रों में भूमि के अन्दर युवावस्था तक कैसे मनुष्य सहित सभी जरायुज प्राणी विकसित होते हैं, इसका सुन्दर चित्रण किया गया है।

जिस प्रकार अमीबा आदि एक कोशीय प्राणी की कोशिका का निर्माण रासायनिक व जैविक क्रियाओं से होता है, उसी प्रकार बहुकोशीय जरायुजों तथा अण्डजों के भी शुक्र तथा रज का निर्माण इस उफनी हुई कोमल तथा सभी आवश्यक पदार्थ, जो भी माता के गर्भ में होते हैं, से परिपूर्ण पृथिवी के धरातल की परतों में हो जाता है। अब हम विचारें कि भ्रूण के पोषण के लिए माता के गर्भ की आवश्यकता क्यों होती है? इस कारण, ताकि भ्रूण को आवश्यक वृद्धि हेतु पोषक पदार्थ प्राप्त हो सकें, भ्रूण को सुरक्षित कोमल, चिकना आवरण तथा आवश्यक ताप मिल सके। यदि इन परिस्थितियों को माता के गर्भ से अन्यत्र कहीं उत्पन्न कर दिया जाये, तो भ्रूण का विकास वहीं हो जायेगा, जिस प्रकार आज परखनली से बच्चे पैदा किये गये हैं।

हाँ, एक बात महत्व की है कि उस समय मनुष्य वा कोई भी जरायुज युवावस्था में भूमि से उद्भिजों की भाँति उत्पन्न होता है। भगवद् दयानन्द जी महाराज का यह कथन सर्वथा उचित है कि यदि शिशु उत्पन्न हो, तो पालन कौन करे और यदि वृद्ध पैदा होते, तब उनसे वंश कैसे चलता? (देखें- सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास) उपनिषत्कार ऋषि इसे और विस्तार देता है।

तस्माच्च देवा बहुधा संप्रसूताः साध्या मनुष्याः .....॥

- मुण्डक उप. २.१.७

अर्थात् उस परमात्मा से अनेक विद्वान् सिद्धि प्राप्तजन तथा साधारण विद्वान् जन पैदा हुए।

आर्य विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री 'वैदिक युग और आदिमानव में बोस्टन नगर (अमेरिका) के स्मिथ सीनियन इंस्टीट्यूट के जीव विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉक्टर क्लार्क को उद्धृत करते हैं-

Man appeared able to think walk and defend himself.

अर्थात् मनुष्य सृष्टि के आदि काल में सोचने, चलने तथा स्वयं की रक्षा करने में समर्थ उत्पन्न होता है।

यहाँ कोई यह प्रश्न करे कि पृथिवी रूपी गर्भ में पच्चीस वर्ष तक युवा कैसे पलता और बढ़ता रहा? तो इस पर गंभीरता से विचारें, तो कोई आपत्ति प्रतीत नहीं होती परन्तु जिस

प्रकार आज भी एक बालक जो लगभग ९ मास माता के गर्भ में रहता है। प्रसव के पूर्व न श्वास लेता है न रोता है न हँसता है। न हाथ पैर फेंकता है। न खाता पीता, मल मूत्रादि विसर्जित करता है, उसमें प्रसव के तुरन्त बाद सभी क्रियाएँ तुरन्त प्रारम्भ हो जाती हैं। तब यह क्या अद्भुत बात नहीं है। आश्चर्यजनक नहीं है? यदि किसी व्यक्ति को इस सबसे दूर रखा जाए और इस प्रसव प्रक्रिया से नितान्त अनभिज्ञ होवे तब वह इस प्रसव प्रक्रिया को संभव नहीं मानेगा। यदि उसने अण्डजों की उत्पत्ति देखी हो तो वह जरायुजों की प्रसव प्रक्रिया को अण्डजों से भिन्न मानने को तैयार नहीं होगा। इसलिए युवावस्था में प्राणियों की उत्पत्ति असंभव नहीं है। हाँ अद्भुत अवश्य है। फिर इतनी सृष्टि प्रक्रिया की जटिलता क्रमबद्धता वैज्ञानिकता क्या अद्भुत नहीं है? तब युवावस्था में प्राणी उत्पत्ति कहाँ विचित्र रह जाती है?

यह भी जानना आवश्यक है कि जिस प्रकार रासायनिक अभिक्रियाओं से भूमि रूपी माता के अंदर प्राणियों की उत्पत्ति होकर सभी जरायुज अण्डज तथा स्वदेज एक ही प्रकार से भूमि की परतों में उद्भिजों की भाँति युवावस्था में पैदा हुए उसी प्रकार रासायनिक अभिक्रियाओं से विभिन्न वनस्पतियों के बीज भूमि की परतों में बनकर तथा आवश्यक पोषक पदार्थ पृथ्वी पर ही मिल जाने से यत्र-तत्र पौधे, वनस्पति या विशालकाय वृक्ष पूर्व में ही उत्पन्न हो गए थे। जिस प्रकार कोई प्राणी उत्पन्न होता है, उसका भोजन तत्काल भूमि पर तैयार मिलता है। मनुष्यों के अनेकों नर नारी जोड़े युवावस्था में भूमि पर प्रकट हुए उस समय उसे पृथिवी, फल, फूल व अन्न आदि से परिपूर्ण मिली और वे भूमि से निकलकर तत्काल ही फलादि उसी प्रकार खाने को प्रवृत्त हुए, जिस प्रकार आज बालक (मनुष्य वा गाय आदि

पशु का) पैदा होते ही माता का दुग्धपान करने लगता है। इसमें कहीं कोई संदेह वा शंका का अवकाश नहीं है।

यह मैंने संक्षेप में मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में लिखा है। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि चार्ल्स डार्विन के पश्चात् उनके पुत्रों सहित अनेकों यूरोपियन वैज्ञानिकों ने भी इस मिथ्या विकासवाद का खण्डन किया। परन्तु पाश्चात्य के दास बने कथित प्रबुद्धों के मस्तिष्क में अभी चार्ल्स डार्विन का भूत बैठा हुआ है।

विज्ञ पाठक ज्ञान व भाषा के विकास के साथ-साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अद्भुत विज्ञान को समझने हेतु 'वेदविज्ञान आलोक' नामक मेरे विशाल ग्रन्थ जो कुल २८०० पृष्ठों का चार भाग में छप रहा है, की प्रतीक्षा करें। हाँ, चलते-चलते एक बात यह भी लिखना उचित समझता हूँ कि यदि कोई प्रबुद्ध यह कहे कि जब सूक्ष्म रश्मियाँ विकास यात्रा करते हुए नाना कण, फोटोन एवं नाना लोकों को उत्पन्न कर सकती हैं अथवा उनके रूप में प्रकट हो सकती हैं, तब अमीबा से मनुष्य शरीर तक के विकास को क्यों मिथ्या बताया जाता है? इस विषय में हमारा निवेदन है कि जड़ जगत् के निर्माण वा विकास में रश्मियाँ कण वा फोटोन प्रायः अपने स्वरूप को भी बनाये रखते हैं, परन्तु कोई विकासवादी यह नहीं मानेगा कि विभिन्न प्राणियों के शरीरों में अमीबा अपने स्वरूप में अवस्थित रहता है। इस कारण यह तुलना करना उचित नहीं है। मेरे मित्रों! जरा विचारें कि जो व्यक्ति वा समाज स्वयं को पशुओं का वंशज कहे, उसमें आत्म स्वाभिमान कहाँ रहेगा? इस विषय में लखनऊ विश्वविद्यालय में दिए एक व्याख्यान में नासा के वैज्ञानिक और भारतीय प्रधानमंत्री के पूर्व वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. ओ.पी. पाण्डेय ने डार्विन के विकासवाद को खारिज करते हुए उचित ही कहा है कि 'देशभर के बच्चों को गलत सिद्धान्त पढ़ाया जा रहा है, जिससे उन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।' (नवभारत टाइम्स २ फरवरी २०१८)

आइये, इस दीनहीनता के गर्त से निकालकर मैं आपको सर्वोच्च शिखर पर ले जाना चाहता हूँ। आयें, हम सब एक ईश्वर के पुत्र-पुत्री हैं एवं यह पृथिवी ही हमारी जन्मदात्री माँ है, इस कारण यह सम्पूर्ण विश्व एक ही परिवार है। इस परिवार को सुख, शक्ति व आनन्द की ओर ले जाने का हम सब मानवों का दायित्व है। हमें विज्ञान को खुले व उदार मस्तिष्क से ही पढ़ने का प्रयास करना चाहिए। हमें पूर्वाग्रहों से बचकर सत्य-असत्य का विवेक करने हेतु सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए।

लेखक- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
वैदिक वैज्ञानिक
अध्यक्ष- स्वस्ति पन्था न्यास
वेद विज्ञान मंदिर, भागलभीम, भीनमाल
जिला- जालोर (राज.)
चलभाष- ९४१४१८२१७३, ७४२४९८०९६३

ऋग्वेद में धनार्जन और उसका उपयोग

सामान्य रूप से यह समझा जाता है कि ऋग्वेद में धनार्जन को कोई अच्छा कार्य नहीं माना जाता है। वेद में केवल आध्यात्म विद्या की ही प्रशंसा की गई है और उसी का विस्तृत वर्णन भी किया गया है। परन्तु यह धारणा यथार्थ नहीं है। वेद अर्थ की उपेक्षा कैसे कर सकता है जबकि सभी प्राणियों के शरीर प्रकृति के पाँच तत्वों आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से बने हुए हैं। दैनिक कर्म से इनका ह्रास होता है, साथ ही शरीर का विकास भी इनके अभाव में असंभव है और यह सब हमें अर्थ के अभाव में उचित मात्रा में उपलब्ध नहीं हो सकता है। ऋग्वेद में धन की उपयोगिता धनार्जन के साधन, आदि पर पर्याप्त वर्णन हुआ है। हम संक्षेप में यह वर्णन पाठकों की जानकारी के लिए यहाँ दे रहे हैं।

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्।
वर्षिष्ठमूतये भर॥ - ऋग्वेद १/८/१

पदार्थ- (एन्द्र) हे इन्द्र! आप कृपा करके हमारी (ऊतये) रक्षा, पुष्टि और सब गुणों की प्राप्ति के लिए (वर्षिष्ठम्) जो अच्छी प्रकार वृद्धि करने वाला (सानसिम्) निरन्तर सेवन करने योग्य (सदासहम्) दुष्ट शत्रु तथा हानि अथवा दुःखों को सहने का मुख्य हेतु (सजित्वानम्) तुल्य शत्रुओं पर विजय दिलाने वाला (रयिम) जो धन है उसको (आभर) अच्छी प्रकार दीजिए।

भावार्थ- इस मंत्र में धन के उपयोग बताये गए हैं। धन प्राप्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन विद्या है।

सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्।
विश्वायुर्धेह्यक्षितम्॥ - ऋग्वेद १/६/७

पदार्थ- हे (इन्द्र) अनन्त विद्यायुक्त सबके धारक परमेश्वर! आप (अस्मे) हमारे लिए (गोमत्) जो धन श्रेष्ठ वाणी और अच्छे अच्छे उत्तम पुरुषों को प्राप्त कराने (वाजवत्) नाना प्रकार के अन्नादि पदार्थों को प्राप्त कराने वा (विश्वायुः) पूर्ण सौ वर्ष या अधिक आयु को बढ़ाने (पृथु) अति विस्तृत (बृहत्) अनेक शुभ गुणों से प्रसिद्ध अत्यन्त बड़ा (अक्षितम्) प्रतिदिन बढ़ने वाला (श्रवः) जिसमें अनेक प्रकार की विद्या वा सुवर्ण आदि धन सुनने में आता है। उस धन को (संधेहि) अच्छे प्रकार नित्य उपयोग के लिए दीजिए।

अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम्।
इन्द्र ता रथिनीरिषः॥ - ऋग्वेद १/६/८

पदार्थ - हे (इन्द्र) सर्वैश्वर्यवान् परमात्मा! आप (अस्मे) हमारे लिए (सहस्रसातमम्) असंख्यात सुखों का मूल (बृहत्) नित्य वृद्धि को प्राप्त होने वाला (द्युम्नम) प्रकाशमय ज्ञान तथा (श्रवः) पूर्वोक्त धन और (रथिनीरिषः) अनेक रथादि साधन सहित सेनाओं को (धेहि) अच्छे प्रकार दीजिए।

भावार्थ- हे जगदीश्वर! आप कृपा करके अत्यन्त पुरुषार्थ के साथ जिस धन के द्वारा बहुत से सुखों को सिद्ध करने वाली सेना प्राप्त होती है उसको हमें दीजिए। धन का उपयोग केवल अपने लिए ही न होकर परोपकार में भी होना चाहिए।

अग्ने यजस्व हविषा यजीयाञ्छ्रुष्टी देष्णमभि गृणीहि राधः।
त्वं ह्यसि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्य वचोसा मनोता॥
- ऋग्वेद २/६/४

पदार्थ- हे (अग्ने) अग्नि के समान तेजस्वी विद्वान्! जिस कारण (त्वं) आप (रयीणाम्) धनादि पदार्थों के बीच (रयिपतिः) धनपति और (त्वम्) आप (शुक्रस्य) शुद्ध करने वाले (वचसः) वचन के (मनोता) उत्तमता से बताने वाले (असि) हैं। (हि) इसीलिए (यजीयान्) अत्यन्त यज्ञकर्त्ता होते हुए (हविषा) हव्य सामग्री से (यज्ञस्व) यज्ञ कीजिए और (देष्णम्) देने योग्य (राधः) धन को (श्रुष्टी) शीघ्र (अभि गृणीहि) सब ओर से प्रशंसा करो।

भावार्थ- जो धनाढ्य धन से परोपकार करें तो वे सबके प्रिय बन जाते हैं।

उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवेदिवे जायमानस्य दस्म।
कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः॥- ऋग्वेद २/६/५

पदार्थ- हे (दस्म) पर दुःख भंजन करने वाले और (अग्ने) अग्नि के समान बढ़ने वाले विद्वान्! (दिवेदिवो) प्रतिदिन (जायमानस्य) सिद्ध हुए जिन (ते) आपका (उभयम्) दान और यज्ञ करना दोनों (वसव्यम्) धनों में प्रसिद्ध हुए काम (न) नहीं (क्षीयते) नष्ट होते सो आप (जरितारम्) विद्यादि गुणों की प्रशंसा करने वाले (क्षुमन्तम्) बहुत अन्न वाले को (कृधि) उत्पन्न करो और (स्वपत्यस्य) जिससे उत्तम सन्तान होते उस (राधः) देने योग्य धन को (पतिम्) पालने, रखने वाले को (कृधि) कीजिए।

भावार्थ- उन्हीं के कुल से धन-नाश नही होता जो और सुपात्रों के लिए संसार का उपकार करने को देता है।

तं नो दात मरुतो वाजिनं रथ आपानं ब्रह्म चितयद्दिवेदिवे।
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनिं मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः॥
- ऋग्वेद २/३४/७

पदार्थ- हे (मरुता) प्राण वायु के समान प्रिय! तुम (नः) हमारे लिए (तम्) उस समस्त विद्या की स्तुति करने वाले को (दात) देओ (रथे) रथ के निमित्त (वाजिनम्) सुशिक्षित घोड़ों को देओ (दिवेदिवे) प्रतिदिन (चितयत्) चेताते हुए (आपानम्) व्यापक

(ब्रह्म) धन वा अन्न को (वृजनेषु) बलों में (स्तोतृभ्यः) सकल विद्याओं के प्रयोजनवेत्ताओं के लिए (इषम्) इष्ट प्रयोजन को (कारवे) करने वाले के लिए (सनिम्) अलग-अलग बढ़ी हुई (मेधाम्) उत्तम बुद्धि को और (अरिष्टम्) अविनष्ट (दुष्टरम्) दुःख से तैरने को योग्य (सहः) बल को देओ।

भावार्थ- मनुष्यों को चाहिए कि सदैव सबके लिए सकल विद्या बताने वाले धर्म से संचित किए हुए धन विद्वानों को देने के लिए अन्न उत्तम प्रज्ञा और पूर्ण बल को जाँचे। विद्वान् जन निश्चय से याचकों के लिए उन उक्त पदार्थों को निरन्तर देवें।

जन्म के साथ मृत्यु पीछे लगा रहता है इसलिए व्यक्ति को आलस्य को त्यागकर पुरुषार्थ करके धन का संग्रह करना चाहिए। अच्छा मकान भी बनाना चाहिए।

नानौकांसि दुर्यो विश्वमायुर्वि तिष्टते प्रभव:शोको अग्नेः।
ज्येष्टं माता सूनवे भागमाधादन्वस्य केतमिषितं सवित्रा॥

– ऋग्वेद २/३८/५

पदार्थ- हे मनुष्यों! जहाँ (नाना) अनेक प्रकार के (दुर्य्यः) द्वारखान् (ओकांसि) घर है वा जहाँ (सवित्रा) सूर्य लोक के साथ (अग्नेः) बिजली आदि रूप अग्नि से (विश्वम्) समस्त (आयुः) ओषध को (वितिष्ठते) विशेषता से स्थिर करता है (प्रभवः) उत्पत्ति और (शोकः) भरण भी होता है जहाँ (अनु अस्य) अनुकूल इस संतान को (इषितम्) इष्ट अभीष्ट चाहे हुए (केतम्) विज्ञान को (आ अधात्) अच्छे प्रकार धारण करती उसमें वा इस जगत् में यथावत् वर्ताव करना चाहिए।

भावार्थ- हे मनुष्यों! जो तुम्हारे जन्म हुए तो मरण भी होगा। इस समय के अन्तराल में सब ऋतुओं में सुख देने वाले घरों को बनाकर विद्या-वृद्धि के लिए पाठशालाएँ अपने पुत्र-पुत्रियों के विद्या और उत्तम शिक्षायुक्त कर पूर्ण आयु को भोगकर यश का विस्तार करना चाहिए।

भावार्थ- धन की प्राप्ति के लिए मनुष्य को सदैव यत्न करना चाहिए।

मेद्यन्तु ते वह्नयो येभिरीयसेऽरिषण्यन्वीळयस्वा वनस्पते।
आयूया धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्ट्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः॥

– ऋग्वेद २/३७/३

पदार्थ- हे (द्रविणोदः) धन के देने और (वनस्पतये) किरण समूह की रक्षा करने वाले! (धृष्णो) प्रगल्भ आप जैसे (वह्नयः) पदार्थ पहुँचाने वाले (ते) आपके (सोमम्) औषध्यादि रस को (मेद्यन्तु) सचिक्कनपने को चाहें वा (येभिः) जिनके साथ आप (ईयसे) प्राप्त होते हो वैसे उनके साथ (अरिषण्यन्) धन की आकांक्षा न करते हुए (वीळयस्वः) स्तुति कीजिए। (अभिगूर्य) और सब ओर से उद्यम कर (आयूया) और मेल कर (नेष्ट्रात्) प्राप्ति से (त्वम्) आप (ऋतुभिः) वसन्तादि ऋतुओं के साथ (सोमम्) औषधि आदि के रस को (पिब) पिओ।

भावार्थः- किसी को बिना उद्यम के नहीं रहना चाहिए। इस प्रकार हमने देख लिया है कि वेद में धन का सम्मान है।

(शिवनारायण उपाध्याय)
शास्त्रीनगर, दादाबाड़ी, कोटा

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

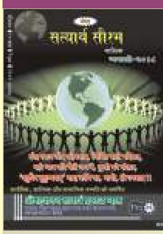

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

भारतवर्ष की बदहाली के मूल कारण

१. न्याय व्यवस्था- देश में बढ़ रहे अपराध और भ्रष्टाचार के लिए हमारी न्याय व्यवस्था विशेष रूप से जिम्मेदार है। अपराधी को जो दण्ड चार-छः महीनों में मिल जाना चाहिए उसमें पन्द्रह-बीस वर्ष लग जाते हैं। राम रहीम के खिलाफ बलात्कार की शिकायत सन् २००२ में की गई थी। उसे दण्ड २०१७ में मिला। बीच के पन्द्रह साल में उसने जो अपराध किए उनके लिए कौन जिम्मेदार है? इस देरी के कारण से लोगों में न्यायालयों का और दण्ड का भय नहीं रहा। माना भी जाता है - Justice delayed is justice denied.

अर्थात् यदि न्याय देने में देरी होती है तो वह न्याय नहीं रहता।

इतना ही नहीं, हमारी न्याय व्यवस्था बहुत महंगी, बहुत पेचीदा और भ्रष्ट है। हमारे देश में हजारों करोड़ रुपए लूटने वाले बड़े अपराधी नेताओं को शायद ही कभी सजा होती है और उनकी लूटी हुई सम्पत्ति शायद ही कभी जब्त होती है। दूसरी तरफ- गरीब आदमी को छोटे से अपराध में ही लम्बे समय तक जेल में रहना पड़ता है। बहुत से गरीब लोग तो जमानत के अभाव में बिना अपराध ही जेलों में पड़े सड़ते रहते हैं। देश के नागरिकों के खिलाफ यह बड़ा अपराध है जो सरकारी तन्त्र के द्वारा किया जाता है।

एक और बड़ी विडम्बना- नीचे की अदालत कोई फैसला देती है और ऊपरी अदालत उस फैसले को पलट देती है। तो नीचे की अदालत को गलत फैसला देने की सजा क्या है, शायद कोई नहीं। न्यायाधीश अपने फैसलों के लिए उत्तरदायी क्यों नहीं?

२. जनसंख्या वृद्धि- देश में जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इस कारण से कोई भी आर्थिक सुधार सफल नहीं हो पा रहा। देश में जमीन तथा अन्य साधन सीमित हैं। बढ़ती आबादी में जरूरत की वस्तुएँ सभी को उपलब्ध करवाना सम्भव न होगा। अब भी देश में बीस करोड़ लोगों को पेट भर खाना नहीं मिलता, वे भूखे पेट सोते हैं। इससे भी अधिक लोग मकानों के अभाव में झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने को मजबूर हैं। अतः जनसंख्या पर नियन्त्रण करने की परम आवश्यकता है।

जनसंख्या वृद्धि के दो कारण हैं

पहला कारण- शिक्षा का अभाव। सांख्यिकी (Statistics) के हिसाब से जो लोग जितने ज्यादा पढ़े लिखे हैं उनके बच्चे उतने ही कम हैं और जो लोग कम पढ़े हैं या अनपढ़ हैं उनके बच्चे ज्यादा हैं। खेद है कि स्वतन्त्र भारत की सरकारों ने ७० वर्षों में देश को शिक्षित करने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया।

दूसरा कारण- मुसलमान मानते हैं कि उनके मजहब में परिवार नियोजन वर्जित है अर्थात् बच्चों की उत्पत्ति को रोकना इस्लाम के खिलाफ है। मुसलमानों का परिवार नियोजन को न मानने का एक और बड़ा कारण यह है कि वे

मुसमलानों की जनसंख्या इतनी अधिक बढ़ाना चाहते हैं जिससे सारे संसार में इस्लाम का और शरीया का शासन लाया जा सके। भारत की सरकारें इस विषय पर मौन हैं। सरकारों का इस विषय पर मौन रहना देश के लिए घातक है। सरकार की जिम्मेदारी है कि वह देश हित में जनसंख्या नियन्त्रण पर दृढ़ता से अमल करवाए।

३. आरक्षण- हमारे देश की आरक्षण की व्यवस्था न न्यायसंगत है और न ही राष्ट्रहित में है। यह सरकारों की अयोग्यताओं और विफलताओं के ऊपर पर्दा डालने का प्रयास मात्र है। कुछ थोड़े से लोगों को सरकारी सुख-सुविधाएँ दे देना, और शेष बहुत से योग्य व्यक्तियों को उनके हाल पर छोड़ देना- यह जनता में फूट डालकर शासन करने की बात तो हो सकती है, राष्ट्र निर्माण की कतई नहीं। आरक्षण नीति से योग्यता निरुत्साहित हुई है और अयोग्यता को बढ़ावा मिला है, देश के नौजवानों में असन्तोष और निराशा पैदा हुई है। इससे देश में द्वेष बढ़ा है, गुणवत्ता और कार्य कुशलता घटी है, राष्ट्र कमजोर हुआ है।

रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, सुरक्षा सभी मनुष्यों की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं। सरकारों की जिम्मेदारी बनती है कि वे सभी को इन आवश्यकताओं की पूर्ति के अवसर प्रदान करें।

४. अनेकता में एकता कैसी?- भाषा के आधार पर अलग-अलग प्रान्त, मजहब के आधार पर अलग-अलग कानून, जातपात के आधार पर अलग-अलग सुविधाएँ, अल्पसंख्यक/बहुसंख्यक के नाम पर बंटवारा- ये अलग-अलग व्यवस्थाएँ देश को जोड़ नहीं रहीं, अपितु तोड़ रही हैं। हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी बारम्बार बड़े जोर शोर से कहते हैं कि 'अनेकता में एकता' हमारी बड़ी ताकत है। मुसलमानों का देश के लिए एक से कानून (Uniform Civil Code) न बनने देना- क्या यह देश की बड़ी ताकत है? आरक्षण पर योग्य नौजवानों का आक्रोश- क्या यह देश की बड़ी ताकत है? क्या धारा ३७० देश की बड़ी ताकत है? अयोध्या में राम मन्दिर पर हिन्दुओं और मुसलमानों में गतिरोध क्या देश की बड़ी ताकत है?आदि-आदि। व्यक्तिगत विषयों में अनेकता रहती है, परन्तु सार्वजनिक और राष्ट्रीय विषयों में एकता का होना परम आवश्यक है जैसे सड़क पर बाईं ओर वाहन चलाने का कानून सबके लिए एक समान है। अनेकता से तो देश में विघटन, विखराव और टकराव ही पैदा होते हैं।

और भी, एकता तो समता में होती है, विषमता में नहीं। सधवा और विधवा में मित्रता नहीं होती, अमीर और गरीब की दोस्ती नहीं होती, भेड़ और भेड़िए की दोस्ती नहीं होती। दोस्ती और एकता तो सधवा की सधवा से, विधवा की विधवा से, अमीर की अमीर से, गरीब की गरीब से, भेड़ की भेड़ से और भेड़िए की भेड़िए से ही होती है। **क्या गोभक्त और गोघातक में एकता सम्भव है?**

५. साम्प्रदायिकता- भारतवर्ष में बड़ा झूम-झूम कर गाया जाता है- 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' और इसका अर्थ लगाया जाता है कि कोई भी मजहब किसी भी दूसरे मजहब से वैर करना नहीं सिखाता। यह बात उतनी ही गलत, झूठी और छलपूर्ण है जितनी कि ज़हर की पुड़िया को संजीवनी बता कर खिला देना।

इतिहास गवाह है कि संसार में जितनी मार-काट, लूट-पाट, अत्याचार विभिन्न मजहबों के कारण हुए हैं और हो रहे हैं उतने और किसी भी कारण से नहीं हुए। अलग मजहब के

कारण ही सन् १९३९ से १९४५ के बीच जर्मनी के डिक्टेटर हिटलर ने साठ लाख यहूदियों को मौत के घाट उतरवा दिया था। विभिन्न मजहबों के कारण ही सन् १९४७ में भारत विभाजन के समय छः लाख निर्दोष लोग मारे गए थे। अलग मजहब के कारण ही सन् १९९० में कश्मीर से चार लाख हिन्दुओं को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा था। अलग मजहब के कारण ही सन् १९७८ से १९९५ के बीच पंजाब में हिन्दुओं को बसों से, गाड़ियों से और घरों से निकालकर गोलियों का निशाना बनाया गया था तथा बड़ी संख्या में हिन्दुओं को पंजाब छोड़ना पड़ा था। अलग मजहब के कारण ही पाकिस्तान में हिन्दू १५ प्रतिशत से घट कर २ प्रतिशत रह गए हैं और बंगलादेश में हिन्दू ३० प्रतिशत से घट कर ८ प्रतिशत रह गए हैं। फिर भी सच्चाई से मुँह मोड़ लेना ऐसे है जैसे बिल्ली को देखके कबूतर आँखें मीच ले और सोच ले कि बिल्ली उसे नहीं खाएगी।

६. सर्वधर्म समभाव- अर्थात् सभी मजहबों के प्रति एक जैसी भावना रखो। यह एक गलत उपदेश है। एक मुसलमान

हिन्दुमत के प्रति इस्लाम जैसी भावना कैसे रख सकता है। वह तो हिन्दू को काफिर मानता है और काफिर के प्रति उनके मजहब में दो ही विकल्प है- उसे मुसलमान बना लेना या उसका कत्ल कर देना। एक गोभक्त गोघातक के प्रति सद्भावना कैसे रख सकता है। इसलिए यह एक कपटपूर्ण कसरत है जिसे सिर्फ हिन्दू ही करते हैं। दुनिया में और किसी मजहब का आदमी ऐसी मूर्खतापूर्ण बात नहीं करता।

७. रिश्वत सम्बन्धी कानून- देश में रिश्वत देना और लेना दोनों अपराध माने जाते हैं। इसी व्यवस्था के कारण लगभग हर छोटे बड़े दफ्तर में रिश्वत के बिना कोई फाईल आगे

नहीं सरकती और लोगों का कोई काम नहीं किया जाता। आम लोगों को दफ्तरों से जो काम पड़ते हैं वे जायज़ ही होते हैं। नाजायज़ काम तो शायद ही कभी किसी का हो। इसलिए रिश्वत कोई भी देना नहीं चाहता। पर दफ्तर के मुलाजिमों द्वारा लोगों को नाजायज तंग किया जाता है, फालतू के चक्कर कटवाए जाते हैं और रिश्वत की माँग की जाती है। लोगों को बेबस होकर रिश्वत देनी पड़ती है।

यदि सरकार सचमुच रिश्वत का धंधा समाप्त करना चाहती है और लोगों का जीवन सरल बनाना चाहती है तो उसे कानून को बदलना होगा। कानून में रिश्वत लेना अपराध हो, देना नहीं।

८. नौकरी की सुरक्षा (Security of Service)- इस व्यवस्था के चलते किसी भी सरकारी नौकर को नौकरी से हटाना बेहद कठिन काम है। इस कारण से ही सरकारी नौकर जनता की परवाह नहीं करते, काम भी अपनी मर्जी से करते हैं या नहीं करते, जनता को तंग करके उनसे घूस लेते हैं। इसीलिए सरकारी नौकरी पाने के लिए मोटी-मोटी धन राशियाँ रिश्वत के तौर पर दी और ली जाती हैं। अतः यह व्यवस्था भ्रष्टाचार उत्पादक है, अकुशलता को बढ़ावा देने वाली है और जनता विरोधी है।

इसी कारण से सरकार दफ्तरों में काम के लिए लोगों को एड्हाक अर्थात् कच्चे तौर पर रखती है। ऐसे मुलाजिमों से काम अधिक लेती है, तनख्वाह पक्के मुलाजिमों के मुकाबले बहुत कम देती है और जब चाहें उन्हें निकाल सकती है। यह अन्याय और दुर्व्यवस्था है। इसकी जड़ में भी नौकरी की सुरक्षा ही है।

९. सरकारी अफसरों के पास अधिकार- सरकारी अफसरों के पास बहुत अधिक अधिकार हैं। जनता के सही काम को गलत और गलत को सही ठहराना उनकी मर्जी पर निर्भर करता है। ऐसे अफसरों पर कोई कार्रवाई नहीं होती। जज चाहे जितना मर्जी गलत फैसला दे दें उन पर कोई कार्रवाई नहीं होती। राष्ट्र के पतन का यह एक बड़ा कारण है। इस प्रकार से मार जनता पर ही पड़ती है।

१०. सरकारी मुलाजिमों का निलम्बन (Suspension) - घोटाले आदि के आरोप में सरकारी मुलाजिम को निलम्बित (Suspend) कर दिया जाता है। फिर सारी सरकारी मशीनरी उसे बचाने में लग जाती है। कुछ समय एनक्वारी का ड्रामा कर उसे नौकरी पर फिर बहाल कर दिया जाता है। किसी बिरले को ही सजा दी जाती है। यह नाटक भी खूब चल रहा है देश में।

११. सरकारी अफसरों की बदलियाँ- सरकारी अफसरों को सरकार अपनी मर्जी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलती रहती है। यह एक बड़ा भ्रष्टाचार और घोटालों का धन्धा है। एक सरकारी अफसर ने एक स्थान पर गलत काम किए, उसकी किसी दूसरे स्थान पर बदली कर दी जाती है। यह सजा नहीं, इनाम है क्योंकि नए स्थान पर वह स्वच्छ (Clean) माना जाता है। दूसरी बात - कुछ अफसर अपनी बदली करवाने के लिए या बदली रुकवाने के लिए रिश्वत देते हैं। कुछ बदलियाँ तो की ही इसलिए जाती हैं कि अफसर अपनी बदली रुकवाने के लिए रिश्वत देंगे। वाह री मेरी सरकार की व्यवस्था!

१२. शासकों को सुविधाएँ- देश में विधायकों, सांसदों, मन्त्रियों और अफसरों को सरकार की तरफ से तनख्वाह, कार, कोठी, नौकर, ड्राईवर तथा यात्रा, चिकित्सा भत्ते आदि सुविधाएँ इतनी अधिक दी जाती हैं कि वे अपने आपको आम जनता से बहुत अलग तथा ऊपर मानने लगते हैं। यह प्रजातन्त्र के नाम पर लूटतंत्र है और जनता से छल है। वास्तविक प्रजातन्त्र में विधायक, सांसद, मन्त्री, अफसर आदि जनता के सेवक होते हैं, मालिक नहीं।

१३. हमारी आयकर प्रणाली- यह विषमता को बढ़ाने वाली और अमीरों के पक्ष में है। इसका कारण है- परिवार के सभी

सदस्यों की आय पर आयकर से अलग-अलग छूट। उदाहरण- एक अमीर परिवार में पति, पत्नी और तीन नाबालिग अविवाहित बच्चे हैं। वह परिवार प्रत्येक सदस्य के नाम पर व्यवसाय आदि दिखाकर लगभग 3,00,000 x5= 15,00,000 रुपए सालाना आय करने पर भी आयकर से मुक्त है। दूसरी तरफ उतने ही सदस्यों का एक साधारण परिवार है जिसमें केवल परिवार का मुखिया ही काम करता है और साल में ४,००,००० रुपए कमाता है। उसे ३,००,००० से उपर की आय पर आयकर देना होता है। इस दुर्व्यवस्था को ठीक करने के लिए पति, पत्नी और नाबालिग अविवाहित बच्चों की (सबकी) आय को इक्कट्ठा (club) करके उस पर आयकर लगना चाहिए।

१४. कर्ज न लौटाने वाले और आत्महत्या करने वाले किसानों को इनाम –

राजनैतिक दलों में होड़ लगी है वोट के लिए किसानों के कर्ज माफ करने की। इसका अर्थ है कि जिन किसानों ने बैंक आदि से कर्ज तो लिया पर लौटाया नहीं, सरकार उनके कर्ज सरकारी खजाने से भरती है। इससे एक बात तो यह है कि यह ईमानदार करदाताओं के धन का दुरुपयोग है और उनकी राष्ट्रभक्ति को निरुत्साहित करना है। दूसरा- जिन किसानों ने कर्ज तो लिए पर लौटाकर अपना फर्ज पूरा नहीं किया उन्हें इस बात का इनाम मिला। तीसरे- जिन किसानों ने अपने कर्ज स्वयं पहले ही लौटा दिए वे अपने आप को ठगा-ठगा महसूस करते हैं और आगे के लिए समझ लेते हैं कि कर्ज तो लो पर लौटाओ नहीं। और भी, जो किसान अपने ऊपर कर्ज के कारण आत्महत्या कर लेता है, हमारी सरकारें उसके परिवार वालों की आर्थिक सहायता करती हैं। क्या सरकारों का यह कदम आत्महत्या करने का इनाम और आत्महत्या करने के लिए उकसाने वाला नहीं है? ये दोनों कदम अन्यायपूर्ण तथा गलत मानसिकता पैदा करने वाले हैं।

सरकार को अगर किसानों की सहायता करनी है तो उसे किसानों के जीते जी करनी चाहिए, वह भी कर्ज माफी के रूप में नहीं, अपितु उन्हें सक्षम बनाकर।

१५. आत्म हत्या का दोषी कौन ?- आत्महत्या करने वाला व्यक्ति (A) लिख कर रख जाता है कि व्यक्ति (B) ने उसे तंग किया, इसलिए वह आत्महत्या कर रहा है। सरकार उस व्यक्ति (B) को उसे आत्महत्या के लिए उकसाने के दोष में पकड़कर दण्डित करती है। क्या अजीब न्याय है? दोषी तो आत्महत्या करने वाला व्यक्ति है और दण्ड दूसरे को दिया जाता है। आत्महत्या करने वाला व्यक्ति जीते जी उस व्यक्ति (B) की शिकायत करे, अगर सरकार शिकायत का निवारण न करे तो सरकार दोषी। परन्तु व्यक्ति (A) की आत्महत्या के लिए व्यक्ति (B) तो कतई दोषी नहीं है।

१६. हमारा संविधान- बेहद बड़ा है, सम्भवतः संसार में किसी भी दूसरे देश का संविधान इतना बड़ा नहीं है। यह जितना अधिक बड़ा है उतना ही अधिक अस्पष्ट भी है। यह देश को जोड़ने वाला नहीं हैं, तोड़ने वाला है। यह भ्रष्टाचार को जन्म देता है और पालता है। राजनयिक लोग अपने स्वार्थ के लिए अपनी मर्जी से इसमें परिवर्तन कर लेते हैं। अब तक इसमें एक सौ के लगभग संशोधन (परिवर्तन) हो चुके हैं। फिर भी यह राष्ट्र का निर्माण करने में पूरी तरह असफल रहा है। संविधान छोटा, स्पष्ट, देश को जोड़ने वाला, भ्रष्टाचार निरोधक और राष्ट्र का श्रेष्ठ निर्माण करने वाला होना चाहिए।

१७. हस्ताक्षर करने का ढंग- हमारे देश में किसी भी दस्तावेज (Document) पर हस्ताक्षर करने का तरीका बड़ा बेढ़ंगा है। उसे कोई पढ़ नहीं सकता, जान नहीं सकता

कि हस्ताक्षर किस नाम के व्यक्ति ने किए हैं। यह प्रथा लोगों को अन्धेरे में रखकर धोखा देने की है। अतः दस्तावेज पर हस्ताक्षर के नाम पर व्यक्ति अपना नाम स्पष्ट तौर पर लिखे, यही उचित होगा।

१८. देश के कानून- उन्नीसवीं सदी में इंग्लैंड में विलियम ग्लैडस्टन नाम के प्रधानमंत्री हुए हैं, उन्होंने लिखा है- It is the duty of the government to make it

difficult for people to do wrong, easy to do right. ..... Good laws make it easy to do right and hard to do wrong.

अर्थात् यह सरकार का कर्तव्य है कि वह लोगों के लिए गलत काम करना कठिन और सही काम करना आसान बनाए। .. .. अच्छे कानून सही काम करना आसान बनाते हैं और गलत काम करना कठिन परन्तु भारत में स्थिति इसके बिल्कुल उलट है।

१९. कुरान और इस्लाम- कुरान मुसलमानों का पवित्रतम ग्रन्थ है। कुरान की हर बात को मानना मुसलमानों के लिए अनिवार्य है और कुरान में लिखी किसी बात पर भी शक करना इस्लाम में अपराध है। कुरान में हर गैर-मुसलमान को काफिर कहा गया है और काफिर को प्रताड़ित करना, मौत का डर दिखाकर उसे मुसलमान बनाना, हर मुसलमान के लिए कर्त्तव्य बताए गए हैं। गैर-मुसलमान को अपने हाथ से मारने वाला मुसलमान सबसे बड़ी पदवी 'गाज़ी' की पाता है। गैर-मुसलमानों पर सब प्रकार से अत्याचार करने का नाम जेहाद है और जेहाद इस्लाम में सबसे अधिक पवित्र काम माना गया है।

और भी- मुसलमान देश में एक समान कानून नहीं बनने देते, जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं लगाने देते, गोहत्या पर पाबन्दी लगाने के विरोधी हैं, देशहित में अपने मुर्दे जलाने को तैयार नहीं, राष्ट्रगान 'वन्दे मातरम्' गाने में उन्हें आपत्ति है। मुस्लिम महिलाओं के लिए समता का कानून भी वे नहीं चाहते। उन्हें दबी कुचली ही रखना चाहते हैं। मदरसों में मुस्लिम बच्चों को कुरान पढ़ाते हैं जो उन्हें दूसरे मजहब वालों से नफरत करना सिखाती है। क्या यह स्थिति राष्ट्रहित में है?

२०. अंग्रेजों के खिलाफ प्रचार- हमारे कुछ राजनेता, तथाकथित बुद्धिजीवी और धर्म के ठेकेदार भारत में अंग्रेजी शासन को खूब कोसते हैं और जनता को गुमराह करते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि अंग्रेजों ने देश का श्रेष्ठ निर्माण किया है, अच्छे कानून दिए हैं, समाज की बहुत सी बुराईयों को दूर किया है, अत्याचारी इस्लामी शासन से छुटकारा दिलाया है, दूसरे उन्नत देशों से व्यवहार करने के लिए तथा उनसे तकनीकी (Technology) लेने के लिए अंग्रेजी भाषा दी है।

दूसरी तरफ- मुस्लिम आक्रमणकारियों और शासकों ने देश की जनता पर सब प्रकार के अत्याचार किए, हिन्दुओं पर जजिया टैक्स लगाया, हिन्दुओं के हजारों मन्दिर और मूर्तियाँ तोड़ीं, करोड़ों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा, करोड़ों को मौत का डर दिखाकर मुसलमान बनाया, हिन्दुओं की बहिन बेटियों से बलात्कार किया, हिन्दुओं की सम्पत्ति को जलाया और लूटा, हिन्दुओं को अन्याय से दण्ड दिया आदि। फिर भी अंग्रेजों को गालियाँ देना और मुसलमानों के सम्बन्ध में मुँह बन्द रखना- यह बड़ी कृतघ्नता, कायरता और दुष्टता नहीं तो और क्या है?

- कृष्ण चन्द्र गर्ग
८३१ सैक्टर १०, पंचकूला, हरियाणा
दूरभाष : ०१७२-४०१०६७९

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब

एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

‘इदन्न न मम - संसार में मेरा कुछ नहीं है?’

हम इस संसार में रह रहे हैं। यह संसार जड़-चेतन जगत् है। इसमें जड़ सूर्य, चन्द्र व पृथिवी सहित सभी लोक लोकान्तर हैं और चेतन पदार्थों में जीवात्मा व मनुष्यादि सभी प्राणी आते हैं। मनुष्य एक चेतन आत्मा व उसके शरीर को जिसमें बुद्धि तत्व अन्य प्राणियों की तुलना में अत्यन्त उन्नत अवस्था में विद्यमान रहता है, कहते हैं। मनुष्य शरीर की आकृति भी सभी प्राणियों से भिन्न प्रकार की है। यह दो पैरों पर चलता है और अपने दो हाथों से नाना प्रकार के कार्यों को करता है। मनुष्य की बुद्धि, ज्ञान व विज्ञान को प्राप्त कर उसका आवश्यकतानुसार उपयोग भी करती है। इसी के कारण संसार में ज्ञान विज्ञान अत्यन्त विकसित हो चुका है। हम जिन उपयोगी पदार्थों की आवश्यकता पर विचार करते हैं उनमें से अधिकांश को हमने विज्ञान से प्राप्त कर लिया है। विज्ञान की यह उन्नति निरन्तर चल रही है। आने वाले समय में हमें अनेकानेक नये-नये आविष्कार देखने को मिल सकते हैं जिससे हमारा जीवन वर्तमान की तुलना में अधिक सुविधापूर्ण हो सकता है।

मनुष्य चेतन आत्मा व इसके मनुष्यरूपी शरीर के युग्म को कहते हैं। मनुष्य शरीर में आत्मा मुख्य है व उसका शरीर आत्मा की तुलना में गौण है। यह शरीर भी आत्मा को रचा रचाया मिला है और अन्न मात्र को भोजन के रूप में ग्रहण करने व वायु व जल के प्रयोग से यह चलता है व वृद्धि को प्राप्त होता है। मनुष्य का आत्मा ईश्वर प्रदत्त शरीर की सहायता से माता-पिता व आचार्यों से भाषा या भाषाओं, ज्ञान-विज्ञान सहित अनेक कार्यों में प्रवीण होता है। वह ऐसा करके धन का अर्जन करता है और उस धन से मकान, वाहन आदि का संग्रह करता है। क्या मनुष्य का शरीर व उसकी धन सम्पत्ति उसकी अपनी है? विचार करने पर ज्ञात होता है कि न तो मनुष्य का शरीर उसका अपना निजी है और न ही उसकी धन-सम्पत्ति उसकी अपनी निजी है। एक दिन उसका शरीर भी नाश व मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा और समस्त धन सम्पत्ति इस पृथिवी पर छूट जायेगी। वह शरीर से निकल कर वायु, आकाश आदि में चला जायेगा और पुनर्जन्म को प्राप्त होगा? जो वस्तु जिसके पास सदा न रहे वह वस्तु उसकी अपनी सम्पत्ति नहीं मानी जाती। आत्मा को शरीर मिलता है और छूट जाता है, धन सम्पत्ति भी यहीं रह जाती है, माता-पिता, बन्धुजन व पुत्र आदि भी यहीं छूट जाते हैं इसलिये यह मनुष्य की आत्मा की अपनी सम्पत्ति व उसका अपना अंग नहीं है।

संसार में मेरा अपना कौन है? इस प्रश्न का उत्तर हमें यह लगता है कि मेरा अपना तो आत्मा है और परमात्मा भी हमारा अपना है। यह कैसे है, इसके लिए आत्मा और हम एक होने से आत्मा से अपनत्व का भाव स्वभावतः जुड़ा हुआ है। परमात्मा इस जगत् का रचयिता एवं पालक है। वह ऐश्वर्यदाता और हमें सुख देने वाला है। वह हमारे दुःख दूर करता व हमें आयु, विद्या, यश व बल की प्राप्ति कराता है। जन्म मरण से अवकाश भी हमें योगाभ्यास, ईश्वरोपासना एवं सद्कर्मों से ईश्वर ही प्राप्त कराता है। हमें जो सुख प्राप्त होता है वह ईश्वर के सान्निध्य से ही होता है। ईश्वर से दूरी अर्थात् ईश्वर उपासना से विरत जीवन का एक अर्थ दुःख भी कहा जा सकता है। हमें ईश्वरोपासना द्वारा ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करना चाहिये इससे हमारा हित होगा। हमारे ज्ञान में वृद्धि होगी और हमें स्वाध्याय और उपासना से होने वाले सभी लाभ प्राप्त होंगे। सृष्टि के आरम्भ से सभी ऋषि-मुनि और महात्मा ऐसा ही करते आये हैं। वेदों में कहा गया है कि ईश्वर ही हमारा, माता, पिता, बन्धु, सखा, गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अतः ईश्वर से हमारे अनेक सम्बन्ध हैं और उन सम्बन्धों के लाभ हमें प्राप्त होते हैं।

यह सब संसार और इसके पदार्थ हमारे नहीं अपितु ईश्वर

के हैं। इसलिए कि ईश्वर ने ही इस संसार को उपादान कारण प्रकृति से बनाया है। इस तथ्य को जानकर हमें अपने सभी भौतिक पदार्थों पर अपना निजी एकमात्र अधिकार व स्वामित्व नहीं मानना चाहिये अपितु इन सबको ईश्वर का मानना चाहिये। 'इदन्न न मम' का अर्थ 'यह मेरा नहीं है' होता है। हमें वैदिक धर्म और संस्कृति के 'इदन्न न मम' यह तीन शब्द बहुत महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। यदि मनुष्य इन पर विचार करे तो उसे यह सत्य प्रतीत होंगे और वस्तुतः हैं भी। इसी भाव से जग में सभी मनुष्यों को अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये। यदि ऐसा करेंगे तो यह संसार स्वर्ग का धाम बन जायेगा। वैदिक काल में यह ऐसा प्रायः रहा है। संसार में भारत वा आर्यावर्त्त सर्वोत्तम व स्वर्ग सम स्थान हुआ करता था। कारण यह था कि यहाँ वेद ज्ञान अपने यथार्थ अर्थों सहित अधिकांश की जिह्वा पर उपस्थित होता था। तभी मनु जी व महर्षि दयानन्द जी ने कहा था कि यह भारत वा आर्यावर्त्त देश ऐसा है कि जिसके समान भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसी कारण इस देश को स्वर्ण भूमि कहा जाता था। संसार में अग्रजन्मा मनुष्यों को यही देश उत्पन्न करता था और इस देश के ऋषि आदि आचार्यों से संसार के अन्य देशों के लोग उत्तम-उत्तम चरित्र आदि की शिक्षा लिया करते थे। 'इदन्न न मम' अर्थात् यह धन, ऐश्वर्य, हमारा शरीर आदि मेरा अपना नहीं है अपितु ईश्वर प्रदत्त है। मुझे त्याग भाव से इसका उपयोग करने का अधिकार है। हमें ऐसा ही करना चाहिये। यदि हम ऐसा करते हैं तो इससे हमें अवश्य लाभ होगा क्योंकि यही वेदाज्ञा व शास्त्रों की शिक्षा है।

१९६ चुक्खूवाला- २, देहरादून- २४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

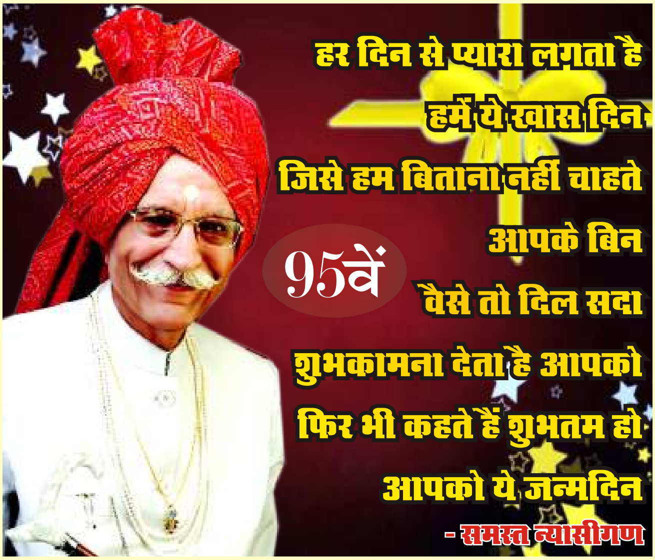

आर्य जगत् के समाचार

आर्य समाज, जखराना के चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, जखराना की चुनावी बैठक हुई। जिसमें घीसाराम आर्य, पूर्व सरपंच को प्रधान, कैलाश कर्मठ को महामंत्री, विजयपाल यादव को कोषाध्यक्ष, शेरसिंह यादव व सहेन्द्र को उपप्रधान, प्रेमपाल को उपमंत्री, युवराज को प्रचार मंत्री व राजबाला आर्या को हवन मंत्री चुना गया। सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का १९४वाँ जन्म दिवस मनाया

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति, अलवर जिले के समस्त आर्य समाजों, समिति द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं व अलवर के प्रबुद्ध नागरिकों के सहयोग से आर्य समाज के संस्थापक, नारी उद्धारक एवं वेद प्रचारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६४वाँ जन्मदिवस १० फरवरी २०१८ को धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ वैदिक विद्या मंदिर, अलवर में मनाया गया। निदेशक श्रीमती कमला शर्मा एवं विद्यालयी छात्राओं द्वारा आगन्तुक मुख्य अतिथियों का स्वागत किया गया। माननीय अतिथियों द्वारा ओ३म् ध्वज दिखाकर तथा रंग-बिरंगे गुब्बारे आकाश में छोड़कर शोभा यात्रा को प्रारम्भ किया गया। - कमला शर्मा, निदेशक, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर

महर्षि दयानन्द जयन्ती पर रैली

आर्य समाज, हिरणमगरी, आर्य समाज, पिछोली एवं महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द जयन्ती के अवसर पर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरण रैली निकाली गई। आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृत लाल जी तापड़िया के निर्देशन में निकाली गई इस रैली में आर्यजनों सहित विद्यालय की बालिकाओं ने भाग लिया। - रामदयाल, प्रचार मंत्री

ऋषि बोध दिवस पर सत्संग सभा

१४ फरवरी २०१८ को महर्षि दयानन्द सरस्वती के बोध दिवस पर आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर द्वारा सत्संग सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज, पिछोली, उदयपुर के मंत्री वैदिक विद्वान् डॉ. सत्यप्रिय शास्त्री ने बोध दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। आर्य समाज के प्रधान श्री भँवर लाल आर्य ने सभी का स्वागत किया। श्रीकृष्ण कुमार सोनी, कुमारी चारवी एवं कुमारी भैरवी ने भजन व देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। - रामदयाल, प्रचार मंत्री

महामहिम राज्यपाल माननीय कल्याण सिंह जी को 'सत्यार्थदूत' श्रीमती सरोज आर्या द्वारा लिखित पुस्तक 'प्रेय से श्रेय की ओर' भेंट करते हुए राजस्थान के लोकायुक्त आर्यपुत्र न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी।

शुभ सूचना- राजस्थान के लोकायुक्त के रूप में माननीय कोठारी जी का कार्यकाल ३१ मार्च २०२१ तक बढ़ाया गया है। अनेक शुभकामनाएँ। - अशोक आर्य

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

१८२४-२५ के वर्ष में भारतीय जनता अंग्रेजी शासन के दमन चक्र और साम्प्रदायिकता तथा धार्मिक कट्टरता और अन्धकार में फसी हुई थी। इसी अंधकार को चीरते हुए रोशनी की एक किरण ने गुजरात में टंकारा ग्राम में उत्पन्न होकर सम्पूर्ण भारतवर्ष को उस अंधकार से बाहर निकाला और वह प्रकाश की नई किरण भारतवर्ष में महर्षि दयानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द १९वीं शताब्दी के महान् समाज सुधारक अद्वितीय व क्रान्तिकारी चिन्तक थे। उन्होंने राष्ट्र की उन्नति के लिए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वदेश, स्वराज्य के पाँच सूत्रों का दिग्दर्शन कराकर भारतीय संस्कृति की रक्षा की प्रेरणा दी।

महर्षि दयान्द के प्रमुख सुधारात्मक कार्य

महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम सुधारात्मक कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु १८७५ में गिरगाँव मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के नियम और सिद्धान्त प्राणी मात्र के कल्याण के लिए हैं। 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।'

महर्षि ने धार्मिक सुधारों की कड़ी में वेदों की सत्ता को सर्वोपरि माना। उन्होंने हरिद्वार में कुम्भ के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर लोगों में धर्म के वास्तविक स्वरूप का संचार किया और उनकी इस धर्म क्रान्ति का सार था कि न तो धर्मग्रन्थों में उलझें और न ही धर्म स्थानों में। उनके धर्म में न तो स्वर्ग का प्रलोभन था और न नरक का भय, बल्कि जीवन की सहजता और मानवीय आचार संहिता का ध्रुवीकरण था। उन्होंने कहा कि गीता, वेदों के खिलाफ नहीं है। 'वेदों की ओर लौटो' उनका प्रमुख नारा था।

महर्षि ने बाल विवाह का विरोध किया था। उन्हीं की प्रेरणा स्वरूप उनके अनुयायी श्री हरविलास शारदा बाल विवाह निरोधक कानून पारित कराकर शारदा एक्ट के जनक के रूप में प्रसिद्ध हुए।

महर्षि दयानन्द ने समाज में व्याप्त जातिप्रथा का विरोध व वैदिक वर्णव्यवस्था का समर्थन किया। उन्होंने जन्मना वर्ण के स्थान पर कर्मणा वर्ण व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को (कर्म के आधार पर) सही माना।

नारी उत्थान पर विशेष जागृति लाते हुए विधवा विवाह समर्थन व स्त्री शिक्षा को बढ़ावा दिया तथा सती प्रथा, देवदासी प्रथा, नरबलि, छुआछूत, मूर्तिपूजा, धार्मिक संकीर्णता व अंधविश्वासों के विरुद्ध जमकर प्रचार किया।

सिर्फ मानव ही नहीं प्राणीमात्र का कल्याण चाहने वाले महर्षि ने गौरक्षा का समर्थन करते हुए 'गौकरुणानिधि' पुस्तक की रचना की व 'गौकृष्यादिरक्षिणी' सभाओं की स्थापना पर बल दिया।

महर्षि सामाजिक सुधार का प्रमुख आधार शिक्षा को मानते थे। महर्षि दयानन्द की शिक्षा पद्धति राष्ट्रनिर्माण के साथ-साथ जीविकोपार्जन, चरित्र निर्माण, आत्मोन्नति, मानव निर्माण, आध्यात्मिक विकास, वैज्ञानिक व धार्मिक मूल्यों के रूप में व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर आधारित थी। जिसमें सबके लिए अनिवार्य शिक्षा, संस्कृत का पुनः उत्थान, संस्कृत व हिन्दी को राष्ट्रभाषा व शिक्षा का माध्यम तथा निःशुल्क शिक्षा व स्त्री शिक्षा प्रमुख ध्येय था।

प्रेरणास्वरूप आर्यसमाज ने ही सर्वप्रथम कन्या पाठशालाओं की स्थापना की। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम १८७५ में स्वराज्य का नारा दिया। जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढ़ाया। १८५७ की राष्ट्रक्रान्ति का बिगुल बजाने वाले नाना साहेब, अजीमुल्ला खाँ, बाला साहब, तात्या टोपे तथा बाबू कुँवरसिंह महर्षि के प्रेरणा स्वरूप थे। इसके अलावा स्वामी श्रद्धानन्द, प. लेखराम, लाला लाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की प्रेरणा से देश हेतु समर्पित हुए।

समाज सुधारों की कड़ी में दलित उत्थान, अनाथ सन्तानों के अधिकारों की रक्षा, अष्टांगयोग की साधना करने वाले योगीराज बालक के व्यक्तित्व सुधार के लिए १६ संस्कारों की कल्पना के साथ ही **'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'** का पाठ पढ़ाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती को हमारा शतशत नमन।

- कविता शर्मा

(पीएचडी शोधार्थी) एवं प्रधानाचार्या

महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय

फतेहनगर (उदयपुर)

समाचार

श्री सत्यव्रत सामवेदी 'कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ' उपाधि से सम्मानित

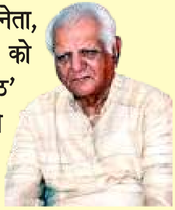

आर्य समाज, राजापार्क के प्रधान, प्रसिद्ध आर्य नेता, चिन्तक, उद्‌भट वक्ता श्री सत्यव्रत सामवेदी को आर्य समाज, अलवर द्वारा 'कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ' की उपाधि से सम्मानित किया गया। श्री सामवेदी जी को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

समाजसेवी आर. पी. हंस का अभिनन्दन

मंगलवार १३ फरवरी २०१८, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक, महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोध दिवस आर्यसमाज सेक्टर २८-३१ फरीदाबाद में श्री प्रेमकुमार मित्तल (एडवोकेट) की अध्यक्षता में मनाया गया ।

समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि देश की आजादी की लड़ाई में महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के अनुयायियों का व्यापक अनुदान रहा है लेकिन आज विघटनकारी शक्तियाँ सिर उठा रही हैं और राष्ट्र की अखण्डता को चुनौती दे रही हैं।

वैदिक विद्वान् आचार्य स्वदेश (मथुरा) ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पर चलने का आह्वान किया ।

समाजसेवी लायन आर. पी. हंस का भव्य अभिनन्दन परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने किया।

सभा के प्रधान डॉ. गजराज सिंह आर्य ने आभार व्यक्त किया और महामंत्री अशोक शास्त्री ने कुशल संचालन किया।

- जितेन्द्र सिंह आर्य-९२१००३८०६५

आर्यसमाज, अजमेर के तत्वावधान में आदर्श विवाह

आर्य समाज, अजमेर के तत्वावधान में माननीय प्रधान प्रो. श्री रासासिंह जी के संरक्षण में पूर्व प्रधानाचार्य श्री उमेशचन्द्र रस्तोगी के सुपुत्र चि. डॉ. वैभव रस्तोगी का आदर्श विवाह सौ. का. कविता गुप्ता (सी.ए.) के साथ वैदिक विद्वान् श्री श्रद्धानन्द शास्त्री ने वैदिक रीति से दिनांक ८ फरवरी २०१८ को आर्य समाज भवन केसरगंज में सम्पन्न करवाया। मन्त्री चन्दराम आर्य ने फूलों से आशीर्वाद देते हुए नव दम्पति को हमेशा प्रसन्नचित रहने की शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

- चन्दराम आर्य, मंत्री आर्यसमाज, अजमेर, ९८८७०७२५०५

आर्य लेखक परिषद् की साधारण बैठक सम्पन्न

आर्य लेखक परिषद् की साधारण बैठक आर्य समाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली के सभागार में आयोजित की गई। आर्य लेखक परिषद् की पत्रिका 'आर्य समाज प्रहरी' का डिजिटल संस्करण शुरू करने की सहमति बनी। नई कार्यकारिणी के गठन पर चर्चा हुई। संरक्षक के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार पद्‌मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि, साहित्यकार डॉ. भवानीलाल भारतीय (जोधपुर), विद्वान् व लेखक आचार्य वेदप्रिय शास्त्री; अध्यक्ष, रामस्वरूप रक्षक (अजमेर), उपाध्यक्ष, साहित्यकार और समाजसेवी अखिलेश आर्येन्दु (दिल्ली), मंत्री, उपमंत्री के पद पर क्रमशः साहित्यकार डॉ. हरीसिंह पाल और आर्य विद्वान् लेखक सतीश आर्य का चयन किया गया। कोषाध्यक्ष के रूप में हनुमान प्रसाद (कोटा) का चयन किया गया। इसके अलावा ब्र. राजेन्द्र आर्य (शक्तिनगर, उ. प्र.), संजय सत्यार्थी (बिहार) डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी (दिल्ली), डॉ. वेदपाल (बड़ौत, मेरठ), डॉ. चन्द्रशेखर लोखंडे (लातूर, महाराष्ट्र) के नाम पर सहमति हुई। - अखिलेश आर्येन्दु, प्रवक्ता और मंत्री, आर्य लेखक परिषद्, नई दिल्ली, मो. ९७१८७७१०३३४, ९८६८२३५०५६

प्रतियोगिता पुरस्कार समारोह

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनिनगर के तत्वावधान में वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का पुरस्कार समारोह आयोजित हुआ। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि लॉर्ड विलियम बेनेटिक स्कूल, मण्डोर एवं सुनीता बाल निकेतन, मगरा पूँजला, जोधपुर में आयोजित परीक्षा परिणाम के अनुरूप बच्चों को स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमान् नरेन्द्र सिंह कच्छवाहा (पूर्व जिला अध्यक्ष, भा.ज.पा.), विशिष्ठ अतिथि श्री राजेन्द्र वैष्णव, सेवाराम आर्य (उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राज.), करणसिंह भाटी, सम्पतसिंह देवड़ा, शेरसिंह गहलोत, जगदीश देवड़ा, कुशजीत कच्छवाहा के द्वारा पुरस्कार वितरण किये गए।

- कैलाश चन्द्र आर्य, प्रधान, मो. ९४६००८३१३३

बहिन पूनम आर्य सम्मानित

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या व राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या को इंडिया न्यूज की तरफ से 'हरियाणा गौरव अवार्ड' 'शान ए हरियाणा' प्रदान किया गया। यह पुरस्कार चंडीगढ़ के ताज होटल में २६ फरवरी की शाम को आयोजित कार्यक्रम में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर व वरिष्ठ पत्रकार दीपक चौरसिया द्वारा प्रदान किया गया। दोनों बहनों को यह सम्मान सामाजिक क्षेत्र में काम करते हुए कन्या भ्रूणहत्या, अश्लीलता व धार्मिक अंधविश्वास के विरुद्ध जागरूकता फैलाने के लिए दिया गया।

इस कार्यक्रम में बोलते हुए बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि हमारा पूरा जीवन बेटियों के मान-सम्मान और स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए समर्पित है, इसलिए मेरा यह सम्मान मैं उन लाखों-करोड़ों अजन्मी बेटियों को समर्पित करती हूँ जो इस दुनिया को देखने से पहले ही विदा हो गईं।

आर्य समाज, हिरणमगरी द्वारा होलिकोत्सव आयोजित

स्थानीय आर्य समाज हिरणमगरी एवं उदयपुर की समस्त आर्य समाजों के तत्वावधान में, आनन्द विहार एवं गोपाल पार्क समिति के सहयोग से, शोभागपुरा क्षेत्र में पंचकुण्डीय वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. सत्यप्रिय शास्त्री ने नवसस्येष्टि यज्ञ का महत्व बताते हुए होलिकोत्सव के सम्बन्ध में प्रचलित पौराणिक गाथाओं के सही स्वरूप को उकेरित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। - डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयोजक

१३ दिवसीय बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ

२७ फरवरी २०१८ टिटौली, हरियाणा में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् व स्वामी इंद्रवेश फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी के विरुद्ध आयोजित १३ दिवसीय बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आज विधिवत रूप से शुभारम्भ हो गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाज सेवी वेद प्रकाश आर्य थे। अध्यक्षता आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम महिला अधिकारों की वकालत की थी। महिलाओं के सम्मान से लेकर उनको शिक्षा दिलवाने तक के लिए बहुत संघर्ष किया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा के प्रधान ब्र.दीक्षेन्द्र आर्य ने बताया कि आज महायज्ञ में ऋग्वेद के मन्त्रों से आहुति शुरू की गई। यज्ञ के ब्रह्मा संन्यास आश्रम, गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चन्द्रवेश जी ने वेदपाठी सीताराम शास्त्री व उदयवीर आर्य के सहयोग से सुचारु रूप से चलाया। स्वामी चन्द्रवेश ने कहा कि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध समाज के सभी संगठन सामूहिक प्रयास करें।

– प्रवेश आर्या, चलभाष– ६४१६६३०६१६

टंकारा (गुजरात) में स्वामी विरजानन्द पुरस्कार का आयोजन

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोधोत्सव के उपलक्ष्य में उनकी जन्म-भूमि टंकारा गुजरात में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित स्वामी विरजानन्द पुरस्कार (योगदर्शन एवं वेदभाष्य प्रतियोगिता) में प्रभात आश्रम के विद्यार्थी तरुण कृष्ण ने प्रथम स्थान प्राप्त कर पाँच सहस्त्र की प्रतियोगिता जीती। प्रभात आश्रम की परंपरानुसार इस अवसर पर हर्षोल्लासपूर्वक सम्मान-सभा का आयोजन किया गया और तरुण कृष्ण को सम्मानित किया गया, इस अवसर पर पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि- यह सम्मान-सभा इसलिए आयोजित की जाती है कि इससे प्रेरित होकर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता हेतु अन्य छात्र भी उत्साहपूर्वक आगे आवें।

शांतिधर्मी परिसर में मनाया गया होली महोत्सव

जींद, नरवाना मार्ग स्थित शांतिधर्मी परिसर में होली का पर्व वैदिक रीति से हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर श्री सहदेव शास्त्री ने कहा कि इस पर्व का मूल नाम नवसस्येष्टि पर्व है और यह हिरण्यकश्यपु की कथा से पहले भी मनाया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि नई फसल के आगमन पर उसको बाँटकर खाने के लिये और भगवान का आभार प्रकट करने के लिये सामूहिक विशाल यज्ञ हवन किये जाते थे, जिससे पर्यावरण शुद्धि होती थी।

वैदिक मिशन मुम्बई का कार्यक्रम

वैदिक मिशन, मुम्बई के द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से आर्य समाज सांताक्रुझ, मुम्बई में, 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द जी, दिल्ली द्वारा की गई। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, स्वामी सदानन्द जी, श्री सुरेश जी अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह जी, श्री अरुण अबरोल, श्री विनय जी आर्य, श्री प्रकाश जी आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी आदि विभूतियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। श्री संगीत आर्य ने सभी उपस्थित महानुभावों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

– सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष

मंत्र पाठ प्रतियोगिता २०१८ सम्पन्न

श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता चेरिटेबल ट्रस्ट,उदयपुर एवं आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति वेद मंत्र पाठ प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक २६ जनवरी २०१८ को किया गया, जिसमें कनिष्ठ व वरिष्ठ दो वर्गों में २६ विद्यालयों के ५४ विद्यार्थियों ने भाग लिया। श्री नरेश चन्द्र बंसल ने समारोह की अध्यक्षता की एवं श्री अशोक आर्य, डॉ. बिहारी लाल जैन एवं श्री सत्यप्रिय शास्त्री ने निर्णायकों के दायित्व का निर्वहन किया। स्वागत एवं संचालन श्री ललिता मेहरा ने एवं धन्यवाद मुख्य न्यासी श्रीमती शारदा गुप्त ने ज्ञापित किया। कनिष्ठ वर्ग में श्री मयंक जोशी (डी.ए.वी. स्कूल) तथा वरिष्ठ वर्ग में सुश्री काव्या कलाल (डी.पी.एस. स्कूल) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग की चल वैजयन्ती डी.ए.वी. स्कूल व वरिष्ठ वर्ग की चल वैजयन्ती दिल्ली पब्लिक स्कूल उदयपुर को दी गई।

– श्रीमती शारदा गुप्ता, मुख्य न्यासी

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सरोत्सव आयोजित

आर्यसमाज हिरण मगरी, उदयपुर ने आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर पर्व प्रभात फेरी के साथ भव्य रूप में मनाया। आर्य समाज मंदिर में श्री रामदयाल जी के पौरोहित्य में पर्व विशेष पर यज्ञ का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री अशोक आर्य ने सभा भवन पर ध्वजारोहण किया और श्रीमती सरला गुप्ता ने सामूहिक ध्वजगीत प्रस्तुत किया। तदुपरान्त धार्मिक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री अशोक आर्य ने आज के ही दिन वर्तमान सृष्टि की उत्पत्ति व मानव के उद्भव पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के दृष्टिकोण को प्रतिपादित किया। इस अवसर पर दयानन्द कन्या विद्यालय की छात्राओं ने चौराहों पर आगंतुकों का तिलक-प्रसाद द्वारा स्वागत किया।

– ललिता मेहरा, मंत्री

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०२/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०२/१८** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; अशोक विहार (दिल्ली), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.),श्री वासुभाई मगनलाल ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; अजमेर (राज.), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर राज.), श्री अनंतलाल उज्जैनिया; भोपाल (म. प्र.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म. प्र.), श्री रमेश चन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरि.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम पृष्ठ १६ पर अवश्य पढ़ें।

अंडा किसी भी तरह शाकाहारी नहीं होता

सब जानते हैं कि मांसाहार का व्यवसाय क्रूरता और हिंसा पर टिका है। लेकिन जब बात अण्डों की होती है तो कई बार वह क्रूरता और व्यवसायिक हिंसा पर्दे की ओट में छिप जाती है और कुछ लोग अंडे को शाकाहारी बताने के प्रचार को सच मान बैठते हैं।

अंडे दो तरह के होते हैं, एक वे जिसमें से चूजे निकल सकते हैं तथा दूसरे वे जिनसे बच्चे नहीं निकलते। निषेचित और अनिषेचित। मुर्गे के संसर्ग से मुर्गी अंडे दे सकती है किन्तु बिना संसर्ग के अंडा मात्र मुर्गी के रज-स्राव से बनता है, मासिक-धर्म की भाँति ही यह अंडा मुर्गी की आन्तरिक अपशिष्ट का परिणाम होता है। आजकल इन्हीं अंडों को व्यापारिक स्वार्थवश लोग अहिंसक, शाकाहारी आदि भ्रामक नामों से पुकारते हैं। यह अंडे किसी भी तरह से वनस्पति नहीं हैं। और न ही यह शाक की तरह, सौर किरणों, जल व वायु से अपना भोजन बनाकर उत्पन्न होते हैं। अधिक से अधिक इसे मुर्गी का अपरिपक्व मुर्दा भ्रूण कह सकते हैं।

१९६२ में यूनिसेफ ने एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें अंडों को लोकप्रिय बनाने के व्यवसायिक उद्देश्य से अनिषेचित (INFERTILE) अंडों को शाकाहारी अंडे (VEGETARIAN EGG) जैसा मिथ्या नाम देकर भारत के शाकाहारी समाज में भ्रम फैला दिया। १९७१ में मिशिगन यूनिवर्सिटी (अमेरिका) के वैज्ञानिक डॉ. फिलिप जे. स्केम्बेल ने 'पाल्ट्री फीड्स एण्ड न्यूट्रीन' नामक पुस्तक में यह सिद्ध किया कि 'संसार का कोई भी अंडा निर्जीव नहीं होता, फिर चाहे वह निषेचित (सेने योग्य) हो या अनिषेचित। अनिषेचित अंडे में भी जीवन होता है, वह एक स्वतंत्र जीव होता है। अंडे के ऊपरी भाग पर हजारों सूक्ष्म छिद्र होते हैं जिनमें अनिषेचित अंडे का जीव श्वांस लेता है', जब तक श्वासोच्छ्वास की क्रिया होती है, अंडा सड़न-गलन से मुक्त रहता है। यह उसमें जीवन होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। 'यदि ऐसे अंडे में श्वासोच्छ्वास की क्रिया बन्द हो जाए तो अंडा शीघ्र ही सड़ जाता है।' इस तरह अंडे को निर्जीव और शाकाहार समकक्ष मनवाना बहुत बड़ी धूर्तता है, यह मात्र उत्पादकों के व्यापारिक स्वार्थ के खातिर प्रचारित भ्रांति से अधिक कुछ भी नहीं है।

हिंसा और अत्याचार की उपज है अंडा !!

बहुधा यह सुनने में आता है कि अनिषेचित अंडे अहिंसक होते हैं। लेकिन यदि यह मालूम हो जाय कि उनके उत्पादन की विधि कितनी क्रूरता से परिपूर्ण है और भारतीय मूल्यों जैसे अहिंसा और करुणा के विपरीत है तो बहुत से लोग अंडा सेवन ही बन्द कर देंगे। अमेरिका के विश्वविख्यात लेखक जान राबिन्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दैट फार ए न्यू अमेरिका' में लिखा है कि अंडों की फैक्ट्रियों में स्थापित पिजरों में, इतनी अधिक मुर्गियाँ भर दी जाती हैं कि वे पंख भी नहीं फड़फड़ा सकतीं और तंग जगह के कारण वे आपस में चोचें मारती हैं, जख्मी होती हैं, गुस्सा करती हैं और कष्ट भोगती हैं। मुर्गी को लगातार १३ घंटे लोहे की सलाख पर बैठे रहना पड़ता है, उसी हालात में एक विशेष मशीन से रात में एक साथ हजारों मुर्गियों की चोचें काट दी जाती हैं। गरम तपते लाल औजारों से उनके पंख भी कतर दिए जाते हैं।

मुर्गियाँ अंडे अपनी स्वेच्छा से नहीं देतीं, बल्कि उन्हें विशिष्ट हार्मोन्स और एग-फार्मूयुलेशन के इन्जेक्शन दिए जाते हैं। तब जाकर मुर्गियाँ लगातार अंडे दे पाती हैं। अंडे प्राप्त होते ही उन्हें इन्क्यूबेटर के हवाले कर दिया जाता है, ताकि चूजा २१ दिन की बजाय मात्र १८ दिन में ही निकल आए। बाहर आते ही नर तथा मादा चूजों को अलग-अलग कर दिया जाता है। मादा चूजों को शीघ्र जवान करने के लिए, उन्हें विशेष प्रकार की खुराक दी जाती है। साथ ही इन्हें चौबीसों घंटे तेज प्रकाश में रखकर, सोने नहीं दिया जाता ताकि वे रात दिन खा-खा कर शीघ्र रज-स्राव कर अंडा देने लायक हो जायँ। उसके बाद भी उन्हें लगातार तेज रोशनी में रखा जाता है ताकि खाती रहें और प्रतिदिन अंडा देती रहें। तंग जगह में रखा जाता है कि हिलडुल भी न सकें, और अंडे को क्षति न पहुँचे। आप समझ सकते हैं कि जल्दी और मशीनीकृत तरीके से अंडा उत्पन्न करने की यह व्यवस्था कितनी क्रूर और हिंसात्मक है।

अंडों से कई बीमारियाँ

हाल ही में हुआ बर्ड फ्ल्यू और साल्मोनेला बीमारी ने समस्त विश्व को स्तम्भित कर दिया है कि मुर्गियों को होने वाली कई बीमारियों के कारण अन्डों से यह बीमारियाँ, मनुष्य में भी प्रवेश करती हैं। अंडा भोजियों को यह भी नहीं मालूम कि इसमें हानिकारक कोलेस्ट्राल की बहुत अधिक मात्रा होती है। अंडों के सेवन से आंतों में सड़न और तपेदिक की सम्भावनाएँ बहुत ही बढ़ जाती हैं। अंडे की सफेद जर्दी से पेप्सीन इन्जाइम के विरुद्ध, विपरीत प्रतिक्रिया होती है।

जर्मनी के प्रोफेसर एग्नरबर्ग का मानना है कि अंडा ५१-८३% कफ पैदा करता है। वह शरीर के पोषक तत्वों को असंतुलित कर देता है।

कैथराइन निम्मो तथा डॉक्टर जे. एम. विलिकाज ने एक सम्मिलित रिपोर्ट में कहा है कि अंडा हृदय रोग और लकवे आदि के लिए एक जिम्मेदार कारक है। यह बात १९८५ इस्वी के नोबल पुरस्कार विजेता, डॉक्टर ब्राउन और डॉ. गोल्ड स्टाइन ने कही कि अंडों में सबसे अधिक कोलेस्ट्रोल होता है। जिससे उत्पन्न हृदय रोग के कारण बहुत अधिक मौतें होती हैं। इंग्लैंड के डॉक्टर आर. जे. विलियम ने कहा है कि जो लोग आज अंडा खाकर स्वस्थ बने रहने की कल्पना कर रहे हैं, वे कल लकवा, एग्जिमा, एन्जाईना जैसे रोगों के शिकार हो सकते हैं। फिर अंडे में जरा-सा भी फाईबर नहीं होता, जो आंतो में सड़न की रोकथाम में सहायक है। साथ ही कार्बोहाईड्रेट जो शरीर में स्फूर्ति देता है, करीबन शून्य ही होता है।

जाने-माने हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. के.के. अग्रवाल का कहना है कि एक अंडे में २१३ मिलीग्राम कोलेस्ट्रॉल होता है यानी आठ से नौ चम्मच मक्खन के बराबर, क्योंकि एक चम्मच मक्खन में २५ मिलीग्राम कोलेस्ट्रॉल होता है। इसलिए सिर्फ शुगर, हाई बीपी और हार्ट पेशेन्ट्स को ही इन्हें दूर से सलाम नहीं करना चाहिए बल्कि सामान्य सेहत वाले लोगों को भी दूर रहना चाहिए। अगर डॉक्टर प्रोटीन की जरूरत भी बताये तो प्रोटीन की प्रतिपूर्ति, शाकाहारी माध्यमों- मूँगफली, सोयाबीन, दालें, पनीर, दूध व मेवे आदि से करना अधिक आरोग्यप्रद है।

इग्लैण्ड के डॉ. आर. जे. विलियम का निष्कर्ष है कि- सम्भव है अंडा खाने वाले भले शुरू में क्षणिक आवेशात्मक चुस्ती-फुर्ती अनुभव करें किन्तु बाद में उन्हें हृदय रोग, एक्जीमा, लकवा, जैसे भयानक रोगों का शिकार होना पड़ सकता है।

फ्लोरिडा के कृषि विभाग की हेल्थ बुलेटिन के अनुसार, अंडों में ३० प्रतिशत DDT पाया जाता है। जिस प्रकार पाल्ट्रीज को रखा जाता है, उस प्रक्रिया के कारण DDT मुर्गी की आंतों में घुल जाता है। अंडे के खोल में १५००० सूक्ष्म छिद्र होते हैं जो सूक्ष्मदर्शी यन्त्र द्वारा आसानी से देखे जा सकते हैं उन छिद्रों द्वारा DDT का विष अंडों के माध्यम से मानव शरीर में पहुँच जाता है। जो कैंसर की सम्भावनाएँ कई गुना बढ़ा देता है। हाल ही में इंगलैंड के डॉक्टरों ने सचेत किया है कि 'सालमोनेला एन्टरईटिस', जिसका सीधा सम्बन्ध अंडों से है, के कारण लाखों लोग इंगलैंड में एक जहरीली महामारी का शिकार हो रहे हैं। भारत में ऐसी कोई परीक्षण विधि नहीं है कि सड़े अंडों की पहचान की जा सके। और ऐसे सड़े अंडों के सेवन से उत्पन्न होने वाले भयंकर रोगों की रोकथाम सम्भव हो सके।

पौष्टिकता एवं उर्जा के प्रचार में नहीं है दम

विज्ञापनों के माध्यम से यह भ्रम बड़ी तेजी से फैलाया जा रहा है कि शाकाहारी खाद्यानों की तुलना में, अंडे में अधिक प्रोटीन है। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के तुलनात्मक चार्ट से यह बात साफ है कि खनिज, लवण, प्रोटीन, कैलोरी, रेशे और कर्बोहाड्रेट आदि की दृष्टि से शाकाहार ही हमारे लिए अधिक उपयुक्त, पोषक और श्रेष्ठ है।

अंडे से कार्य-क्षमता, केवल क्षणिक तौर पर बढ़ती सी प्रतीत होती है, पर स्टेमिना नहीं बढ़ता। फार्मिंग से आए अंडे तो केमिकल की वजह से ज्यादा ही दूषित या जहरीले हो जाते हैं। सामान्यतया गर्मियों में पाचनतंत्र कमजोर होता है, ऐसे में अंडे ज्यादा कैलोरी व गरिष्ठ होने के कारण और भी ज्यादा नुकसानदेह साबित होते हैं।

अमेरिका के डॉ. ई. बी. एमारी तथा इग्लैण्ड के डॉ. इन्हा ने अपनी विश्वविख्यात पुस्तकों में साफ माना है कि अंडा मनुष्य के लिए जहर है।

विशेषज्ञ कहते हैं कि प्रोटीन के लिए, सभी तरह की दालें, पनीर व दूध से बनी चीजें अंडे का श्रेष्ठ विकल्प होती हैं। अंडों की जगह उनका इस्तेमाल होना चाहिए। दूध या स्किम्ड मिल्क, मूँगफली, मेवे में अखरोट, बादाम, काजू व हरी सब्जियाँ, दही, सलाद और फल भी ले सकते हैं।

न हमारे शरीर को अंडे खाना जरूरी है और न हमारे मन को जीव हिंसा का सहभागी बनना। हमारा अनुरोध है कि निरामिष भोजन अपनायें और स्वस्थ रहें।

साभार- निरामिष

किसान और गेहूँ के दाने

दुःख के समय दुनिया और दुनिया वाले बेहद जालिम प्रतीत होते हैं। और, दुःख तब होता है जब चीजें आपकी इच्छानुसार नहीं होतीं। परंतु यह भी सच है कि दुनिया की तमाम चीजें सारे समय आपकी इच्छानुसार नहीं हो सकतीं। अपनी स्वयं की प्रकृति के अनुरूप घटनाएँ घटती रहती हैं। चीजों की प्रकृति कोई नहीं बदल सकता। आग में गर्मी है तो पानी में ठण्डक। क्या इनकी प्रकृति बदल सकती है? कदापि नहीं। बुद्धिमान व्यक्ति वही है जो धीरज रखे और प्रकृति के साथ तारतम्य बनाए रखे।

जब आप प्रकृति के साथ अपना तारतम्य बिठा लेंगे तो दुःख नहीं होगा। तब दुःख भी आपको प्रकाशवान और सहज लगेगा। ऐसा नहीं है कि दुःख आपके पास आएँगे ही नहीं। वे आएँगे, मगर दुश्मन के रूप में नहीं। मित्र के रूप में आएँगे क्योंकि तब आपको पता होगा कि जीवन में दुःख भी आवश्यक हैं, यह जीवन का अभिन्न अंग है।

एक प्राचीन दृष्टान्त है। एक दिन एक वृद्ध किसान ने ईश्वर से कहा –'आप ईश्वर हैं, ब्रह्माण्ड को आपने बनाया है, मगर आप किसान नहीं हैं और आपको खेती किसानी नहीं आती, इसलिए दुनिया में समस्याएँ हैं।'

ईश्वर ने पूछा–'तो मुझे क्या करना चाहिए?'

किसान ने कहा– 'मुझे एक वर्ष के लिए अपनी शक्तियाँ दे दो। मैं जो चाहूँगा वो हो। तब आप देखेंगे कि दुनिया से समस्याएँ, गरीबी, भुखमरी सब समाप्त हो जाएँगी।'

ईश्वर ने किसान को अपनी शक्ति दे दी। किसान ने चहुँओर सर्वोत्तम कर दिया। मौसम पूरे समय खुशगवार रहने लगा। न आँधी न तूफान। किसान जब चाहता बारिश हो तब बारिश होती, जब वो चाहता कि धूप निकले तब धूप निकलती। सब कुछ एकदम परिपूर्ण हो गया था। चहुँओर फसलें भी लहलहा रही थीं।

जब फसलों को काटने की बारी आई तब किसान ने देखा कि फसलों में दाने ही नहीं हैं। किसान चकराया और दौड़ा-दौड़ा भगवान के पास गया। उसने तो सबकुछ सर्वोत्तम ही किया था और यह क्या हो गया था। उसने भगवान को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

भगवान ने स्पष्ट किया– 'चूँकि सब कुछ सही था, कोई संघर्ष नहीं था, कोई जिजीविषा नहीं थी। तुमने सब कुछ सर्वोत्तम कर दिया था तो फसलें नपुंसक हो गईं। उनकी उर्वरा शक्ति खत्म हो गई। जीवन जीने के लिए संघर्ष अनिवार्य है। ये आत्मा को झकझोरते हैं और उन्हें जीवन्त, पुंसत्व से भरपूर बनाते हैं।'

यह दृष्टान्त अमूल्य है। जब आप सदा सर्वदा खुश रहेंगे, प्रसन्न बने रहेंगे तो प्रसन्नता, खुशी अपना अर्थ गंवा देगी। यह तो ऐसा ही होगा जैसे कोई सफेद कागज पर सफेद स्याही से लिख रहा हो। कोई इसे कभी देख-पढ़ नहीं पाएगा।

खुशी को महसूस करने के लिए जीवन में दुःख जरूरी है। बेहद जरूरी।

(सुनील हांडा की किताब 'स्टोरीज फ्राम हियर एंड देयर' से साभार अनुवादित)

कृतित्व प्रमाण है कर्त्ता का

भूगोल के एक प्रोफेसर के एक ऐसे मित्र जो सृष्टि के कर्त्ता ईश्वर के अस्तित्व में संदेह करते व सृष्टि को स्वतः (अपने आप) अकस्मात् निर्मित मानते थे, प्रोफेसर की मेज पर रखे सौर मण्डल के सुन्दर मॉडल को देख पूछ बैठे- यह कितना सुन्दर है- यह किसने बनाया? प्रोफेसर ने उत्तर दिया- 'किसी ने नहीं यह स्वयमेव बन गया।' मित्र ने कहा- 'क्यों मजाक करते हो भला बिना बनाए भी कोई चीज बन सकती है?' तो प्रोफेसर ने कहा कि यह तुच्छ मॉडल जिस विशाल सौर मण्डल की एक लघु स्थिर प्रतिकृति मात्र है उसे ही आप बिना कर्त्ता के निर्मित हुआ नहीं मान रहे है तो सुनिश्चित नियमों में बंधे अत्यन्त विशाल सौर मण्डल को बिना कर्त्ता के क्यों मानते हो?' और नियम भी कैसे? जिनमें अल्पांश में भी विक्षेप नहीं होता। इसी कारण ज्योतिर्विद हजारों वर्ष पूर्व ही भविष्य की खगोलीय घटनाओं का ठीक-ठीक समय बता सकते हैं।' अब मित्र के पास कोई उत्तर न था।

मित्रों! ब्रह्माण्ड की विशालता का तनिक अनुमान लगाइये हमारी पृथ्वी का द्रव्यमान दस अरब ६६०० अरब टन है। सूर्य पृथ्वी से भी ३,३०,००० गुणा भारी है।

इस संकेत से ही हमारे सौरमण्डल के कुल द्रव्यमान की गणना कीजिए। एक आकाश गंगा में ऐसे अथवा इससे अधिक भार वाले कम से कम दस अरब सूर्य हैं। और ऐसी आकाश गंगाओं जैसी कम से कम एक लाख आकाश गंगाऐं हैं। क्या इस सब की विशालता की कल्पना की जा सकती है? क्या यह अल्पज्ञ, अल्प सामर्थ्यवान मनुष्य की रचना हो सकती है? अतः यह केवल प्रभु की सत्ता व सामर्थ्य का ही चमत्कार है, इससे मानने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं। यह भी तो विचारें कि इतने विशाल पिण्ड़ों के साथ 'अकस्मात्' के नियम को मानें तो क्या ये कभी टकराऐंगे नहीं। वास्तविकता तो यह है कि ये पिण्ड गति तथा परिभ्रमण के जिन नियमों से बंधे है उनमें यत्किञ्च भी स्वेच्छाचारिता ये बरत सकें तो न सिर्फ स्वयं विनष्ट हो जावेंगे वरन् ब्रह्माण्ड ही समाप्त हो जावेगा। ऐसा इसलिए नहीं हो पाता है क्योंकि ये सब नियन्ता के नियंत्रण में ही गतिशील हैं, स्वतंत्र नही।

ईश्वर सृष्टिकर्ता है-

स हि सर्ववित् सर्वकर्ता। - सांख्य दर्शन ३/५६

वह परमेश्वर सबको जानने वाला-सर्वज्ञ तथा सब संसार की रचना करने वाला है।

अतएव निश्चित सिद्धान्त यही है और यही समझना चाहिये कि कोई भी कार्य, रचना अथवा नियम बिना कर्त्ता, रचनाकार अथवा नियामक के संभव नहीं। हर कृति, हर नियम अपने कर्त्ता के होने का प्रबल प्रमाण है। इसीलिए वेद में कहा कि प्रभु की सत्ता पर विश्वास करना है तो उसकी रचना को देखो। **'पश्य देवस्य काव्य'**। ईश्वर की नियमबद्ध सृष्टि ही उसके होने का सर्वोत्तम प्रमाण है। महर्षि दयानन्द अपने वेद भाष्य में लिखते हैं कि-

तत्त इन्द्रियं परमं पराचैरधारयन्त कवयः पुरेदम्।
क्षमेदमन्यद्दिव्यन्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः॥ - ऋ. १.१०३.१

हे मनुष्यों! जो-जो इस संसार में रचना विशेष से युक्त उत्तम वस्तु है, वह-वह सब परमेश्वर के बनाने से ही प्रसिद्ध है ऐसा जानो। ऐसा विचित्र संसार विधाता के बिना संभव नहीं हो सकता। इसलिये निश्चय ही इस जगत् का रचयिता ईश्वर है और जीव रचित सृष्टि का कर्त्ता जीव है।

सुधी पाठक विचार करें कि यह धारणा कि जड़ पदार्थ स्वयमेव अकस्मात् मिल गये और सृष्टि बन गई क्या बुद्धिगम्य है? सदैव स्मरण रखना चाहिए कि सृष्टि में संयोग के साथ वियोग भी प्रत्यक्ष है। जो पदार्थ भिन्न-भिन्न तत्वों के मेल से बनता है वह कभी न कभी विनष्ट भी होता है।

जड़ प्रकृति स्वयं क्रियाशील नहीं है-

उपरागात्कर्तृ त्वं चित्सान्निध्याच्चित्सान्निध्यात्॥

- सांख्य दर्शन १/१२६

परमेश्वर के सम्बन्ध से ही प्रकृति में कर्तृत्व आता है, जड़ होने से स्वयं नहीं। जड़ पदार्थ न साथ-साथ रह सकते हैं न कार्य कर सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जिन जड़ परमाणुओं में संयोग का गुण है वे संयोग ही करेंगे, तो वह पदार्थ विनष्ट कैसे होगा? इसी प्रकार जिन जड़ परमाणुओं में अलग-अलग रहने की प्रवृत्ति है, वे संयोग कैसे करेंगे अर्थात् पदार्थ बनेगा कैसे? यदि दोनों गुण एक साथ मान भी लिये जायँ तो विरोधी होने के कारण न निर्माण होगा न विनाश। अतः ऐसी कोई समर्थ सत्ता अवश्य होनी चाहिए जो इन जड़ पदार्थों को स्व-ईक्षण से मिलाती, कायम रखती व विनष्ट करती है। ब्रह्माण्ड की विशालता, विविधता, चमत्कारिक अद्भुत नियमों की उपस्थित पर दृष्टि डालते ही पता चल जाता है कि यह कार्य अल्पज्ञ मनुष्य का हो ही नहीं सकता। यह मात्र सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही कार्य हो सकता है।

- अशोक आर्य

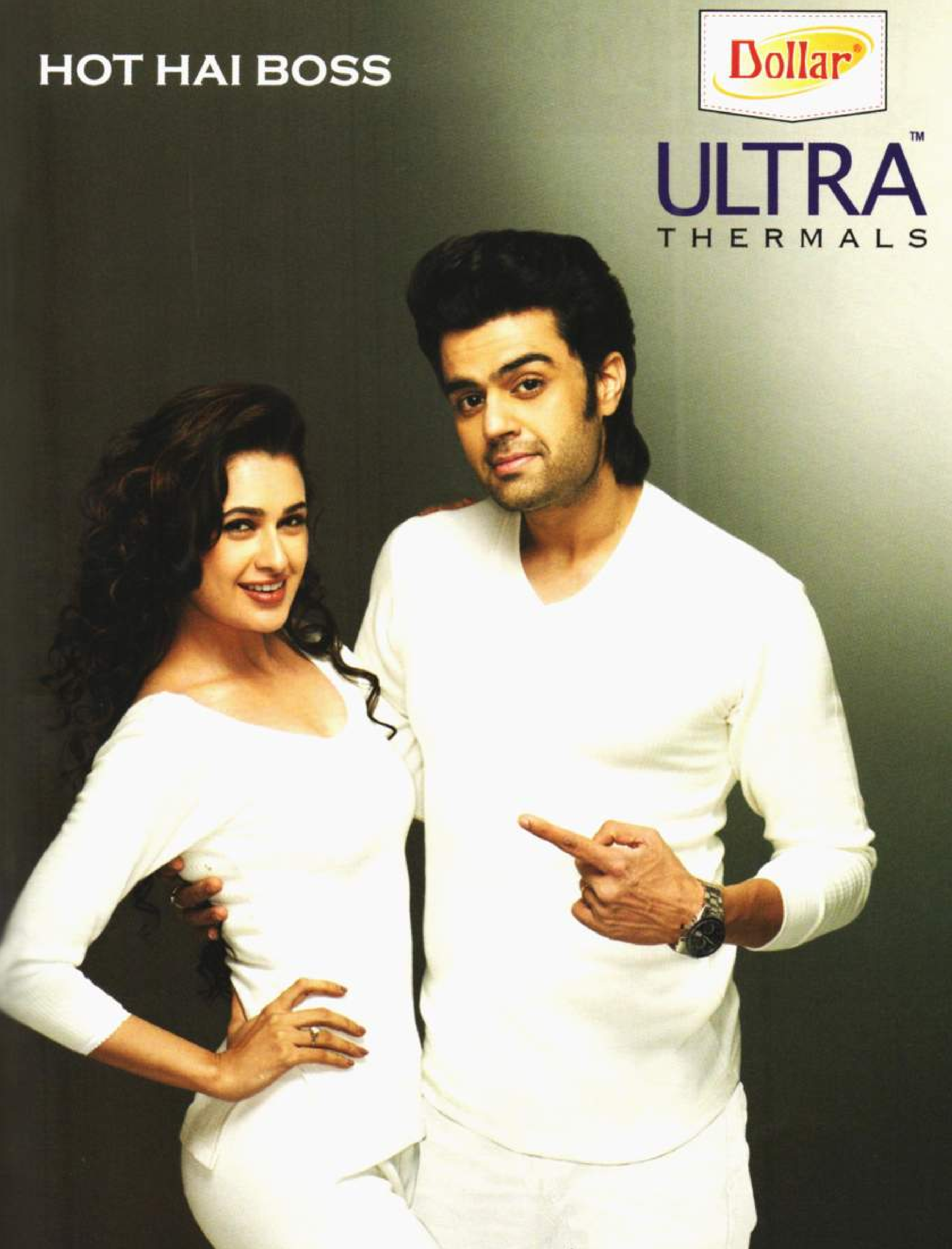
HOT HAI BOSS
Dollar
ULTRA
THERMALS

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April-2018 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जिस घर वा कुल में स्त्री लोग आनन्द से उत्साह और प्रसन्नता में भरी हुई रहती हैं, वह कुल सर्वदा बढ़ता रहता है।

सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ९६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर